Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا

(सूरत अल-बक़रा आयत :287)

अनुवाद: अल्लाह किसी जान पर उस की ताकत से बढ़ कर बोझ नहीं डालता उस के लिए जो उस ने कमाया उस का बदला भी उस पर है जो उस ने बदी को कमाया हे हमारे रब्ब हमारी पकड़ न कर अगर हम भूल जाऐं या हम से कोई भूल हो जाए।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 49

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

27 रबीयुल अव्वल 1439 हिजरी कमरी 6 फत्ह 1397 हिजरी शमसी 6 दिसम्बर 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

बुराइयों से बचने वाले इन्सान बन जाओ ताकि तुम्हारी आयु बढ़ जाए और तुम ख़ुदा से वरदान पाओ। सीमा से अधिक भोग-विलास में पड़ना लानती जीवन है। सीमा से अधिक दुराचारी और निरर्थक होना लानती जीवन है, हद से अधिक ख़ुदा या उसके भक्तों की हमदर्दी से लापरवाह होना लानती जीवन है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

बुराइयों से बचने वाले इन्सान बन जाओ ताकि तुम्हारी आयु बढ़ जाए और तुम ख़ुदा से वरदान पाओ। सीमा से अधिक भोग-विलास में पड़ना लानती जीवन है। सीमा से अधिक दुराचारी और निरर्थक होना लानती जीवन है, हद से अधिक ख़ुदा या उसके भक्तों की हमदर्दी से लापरवाह होना लानती जीवन है। प्रत्येक अमीर से ख़ुदा के अधिकारों और मनुष्य के अधिकारों के विषय में ऐसे ही पूछा जाएगा जैसे एक फ़कीर से बल्कि उससे भी अधिक। अत: कितना दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जो इस अल्पकालिक जीवन पर निर्भर रहकर ख़ुदा को पूर्णतया तिलांजलि दे देता है और ख़ुदा की अवैध वस्तुओं का इतनी बेशर्मी से उपभोग करता है जैसे वह अवैध उसके लिए वैध है। क्रोध की दशा में दीवानों की भांति किसी को गाली, किसी को ज़ख़्मी तो किसी को क़त्ल करने के लिए तैयार हो जाता है और कामुक आवेग में बेशर्मी के मार्गों को चरम सीमा तक पहुँचा देता है। अत: वह सच्ची ख़ुशहाली प्राप्त नहीं कर सकेगा, यहां तक कि मृत्यु आ जाएगी। हे मित्रो तुम अल्प समय के लिए इस संसार में आए हो और उनमें से भी बहुत सा समय व्यतीत हो गया है। अत: अपने ख़ुदा को रुष्ट मत करो। एक इन्सानी सरकार जो तुम से प्रबल हो यदि वह तुम से नाराज़ हो तो वह तुम्हें नष्ट कर सकती है। अत: तुम विचार कर लो, ख़ुदा की नाराज़गी से तुम कैसे बच सकते हो। यदि तुम ख़ुदा की दृष्टि में संयमी हो जाओ तो तुम्हें कोई भी नष्ट नहीं कर सकता, वह स्वयं तुम्हारी रक्षा करेगा और वह शत्रु जो तुम्हारे प्राणों के पीछे पड़ा हुआ है तुम पर काबू नहीं पा सकेगा, अन्यथा तुम्हारे प्राणों का कोई रक्षक नहीं। तुम शत्रुओं से भयभीत होकर या अन्य आपदाओं से ग्रसित होकर बेचैनी से जीवन व्यतीत करोगे और तुम्हारी आयु के अन्तिम दिन बड़े शोक और क्रोध के साथ व्यतीत होंगे। ख़ुदा उन लोगों की शरण बन जाता है जो उसके साथ हो जाते हैं। अत: ख़ुदा की ओर आ जाओ और उसका विरोध करना त्याग दो। उसके कर्तव्यों में आलस्य से काम न लो, उसके भक्तों पर अपनी वाणी या अपने हाथ से अत्याचार [1] मत करो और आसमानी प्रकोप और क्रोध से डरते रहो **कि मुक्ति का मार्ग यही है।**

हे इस्लाम के विद्वानो! मुझे झूठा कहने में जल्दी न करो कि बहुत से रहस्य ऐसे होते हैं कि मनुष्य जल्दी से समझ नहीं सकता। बात को सुनकर उसी समय उस का खण्डन करने के लिए तैयार मत हो जाओ कि यह संयम का मार्ग नहीं है। यदि तुम में कुछ दोष न होते और यदि तुमने कुछ हदीसों के उलटे अर्थ न किए होते तो मसीह मौऊद जो न्याय करने वाला है का आना ही व्यर्थ था। तुम से पूर्व यह नसीहत प्राप्त करने का स्थान मौजूद है कि जिस बात पर तुमने बल दिया है और जिस स्थान पर तुमने क़दम रखा है उसी स्थान पर यहूदियों ने रखा था अर्थात् जैसा कि तुम हज़रत ईसा के दोबारा आने की प्रतीक्षा कर रहे हो, वे भी इल्यास नबी के दोबारा आने की प्रतीक्षा कर रहे थे और कहते थे कि मसीह तब आएगा जब कि पहले इल्यास नबी जो आकाश पर उठाया गया दोबारा दुनिया में आ जाएगा। जो व्यक्ति इल्यास के दोबारा आने से पूर्व मसीह होने का दावा करे वह झूठा है और वे न केवल हदीसों के अनुसार ऐसी विचारधारा रखते थे अपितु परमेश्वर की पुस्तक को जो कि मलाकी नबी की पुस्तक है। इसके प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत करते थे। परन्तु जब हज़रत ईसा ने अपने बारे में यहूदियों के मसीह मौऊद होने का दावा कर दिया और इल्यास आकाश से न उतरा जो उस दावे की शर्त थी तो इन यहूदियों की समस्त आस्थाएं मिथ्या सिद्ध हो गईं और जो यहूदियों की विचारधारा थी कि एलिया नबी इस भौतिक शरीर के साथ आकाश से उतरेगा अंतत: उसका अभिप्राय यह निकला कि इल्यास की आदत और स्वभाव पर कोई अन्य व्यक्ति प्रकट हो जाएगा। इस अभिप्राय का उल्लेख स्वयं हज़रत ईसा ने किया, जिन को दोबारा आकाश से उतार रहे हो। अत: तुम क्यों ऐसे स्थान पर ठोकर खाते हो जिस स्थान पर तुम से पूर्व यहूदी

शेष पृष्ठ 12 पर

124 वां
जलसा सालाना क़ादियान
दिनांक 28, 29, 30 दिसम्बर 2018 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 124 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 28, 29 और 30 दिसम्बर 2018 ई.(शुक्रवार, शनिवार व रविवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

पैग़ाम

जोश सामयिक नहीं होना चाहिए बल्कि एक मोमिन का काम है कि नेक कामों में निरंतरता पैदा करे। नेकियों में आगे बढ़ना और व्यावहारिक रूप को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक क्षण कोशिश करे।

कुछ साल पहले आप ने व्यावहारिक सुधार के बारे में मेरे क्रम से ख़ुत्बे होंगे और इन में बहुत सी नेक नसीहतें हैं याद रखेंगे व्यावहारिक सुधार से आप की लड़ाइयां माल की हवस, टीवी और दूसरे माध्यमों से बेहूदा प्रोग्रामों को देखना, एक दूसरे के सम्मान में कमी इत्यादि सब बुराइयां समाप्त हो जाएंगी।

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़

सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत 2018

प्रिय मेम्बरान मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत

अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातुहो

मुझे जानकर ख़ुशी हुई है कि आपको अपना सालाना इज्तिमा आयोजित करने का अवसर मिल रहा है अल्लाह तआला इसका आयोजन प्रत्येक दृष्टि से बरकतों वाला फरमाए और इसके परिणाम नेक पैदा फरमाए। आमीन।

अल्लाह तआला के फज़्ल से दुनिया भर की जमाअतें धार्मिक तरक्की और रूहानी तरक्की के लिए जल्से तथा इज्तिमा आयोजित करती हैं इस प्रकार के अवसरों पर विभिन्न विषयों पर दरस तथा तकरीरें होती हैं जिन से धार्मिक ज्ञान में वृद्धि होती है। ख़िलाफत की बरकतों का वर्णन होता है जिससे जमाअत के लोगों को समय के ख़लीफा से मुहब्बत और तथा प्रेम की भावना में अधिक वृद्धि होती है। जमाअत के निज़ाम को उत्तम रंग में समझने और इस से संबंध मज़बूत करने का अवसर मिलता है। जमाअत के साथ नमाज़ों और दुआओं की तौफीक़ मिलती है। आपस में परिचय बढ़ता है। परस्पर भाईचारा को बढ़ावा मिलता है। काम करने वालों को देखकर ख़िदमत दीन की तहरीक होती है। अत: इस प्रकार के रूहानी माहौल से विशेष बरकतें जुड़ी होती हैं। धार्मिक मज्लिसों को अल्लाह तआला बहुत पसंद आता है। एक हदीस में आता है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला के कुछ सम्माननीय फरिश्ते घूमते रहते हैं और उन्हें ज़िक्र की मज्लिसों की तलाश रहती है जब वह किसी मज्लिस में आते हैं जहां अल्लाह तआला का ज़िक्र हो रहा हो तो वहां बैठ जाते हैं और परों से उस को ढांप लेते हैं सारा परिवेश उनके साया से भर जाता है

आप का इज्तिमा भी विशेष रूप से धार्मिक उद्देश्य के लिए है इस में शामिल होने से आप के अंदर रूहानी बेदारी पैदा होगी। परन्तु आपका यह जोश सामयिक नहीं होना चाहिए बल्कि एक मोमिन का काम है कि नेक कामों में निरंतरता पैदा करे। नेकियों में आगे बढ़ना और व्यावहारिक रूप को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक क्षण कोशिश करे। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"जो आदमी मुस्लेह बनना चाहता है। उसे चाहिए कि पहले ख़ुद रोशन हो और अपना सुधार करे। देखो यह सूरज जो रोशन है पहले उसने ख़ुद रोशनी हासिल की है। मैं नि:सन्देह समझता हूं कि हर एक क़ौम के शिक्षक ने यही शिक्षा दी है लेकिन अब दूसरे पर लाठी मारना आसान है लेकिन अपनी कुर्बानी देना मुश्किल हो गया है अत: जो चाहता है कि क़ौम का सुधार करे उसे चाहिए अपने से सुधार करे। पुराने ज़माना के ऋषि तथा अवतार जंगलों तथा वनों में जाकर अपना सुधार क्यों करते थे वे आजकल के लेक्चर देने वालों की तरह मुंह न खोलते थे जब तक स्वंय व्यवहार न कर लेते थे। यही ख़ुदा तआला के सानिध्य तथा मुहब्बत की राह है और जो आदमी दिल में कुछ नहीं रखता उस का वर्णन करना परनाला के पानी की तरह होता है, मअरफत के नूर तथा व्यवहार से भर कोर बोलता है वह बारिश की तरह है जो रहमत समझी जाती है।" (मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 162)

याद रखें कि आप मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया के मेम्बर हैं जो हमारी नौजवानों की संस्था है। इस के संस्थापक हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो की यह नसीहत आप ने बार बार सुनी होगी कि

क़ौमों का सुधार नौजवानों के सुधार के बिना नहीं हो सकता।

इस उपदेश को व्यावहारिक नसीहत बनाने की आवश्यकता है हर समय अपनी बुराइयों और कमज़ोरियों की समीक्षा करते रहें। इन के कारणों को जानने की कोशिश करें और उन माध्यमों से अवगत हों जिससे कमियां दूर की जा सकती हैं कुछ साल पहले आप ने व्यावहारिक सुधार के बारे में मेरे क्रम से ख़ुत्बे होंगे और इन में बहुत सी नेक नसीहतें हैं जैसे यह बताया गया कि ज़माने के आविष्कारों तथा सुविधाओं से लाभ उठाना मना नहीं है। इन के माध्यम से आप ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का सहायक बनना है न कि निर्लज्जता, अधार्मिकता, बेदीने के प्रभाव में अपने आप को दुश्मन के हवाले करना है। याद रखें व्यावहारिक सुधार से आप की लड़ाइयां माल की हवस, टीवी और दूसरे माध्यमों से बेहूदा प्रोग्रामों को देखना, एक दूसरे के सम्मान में कमी इत्यादि सब बुराइयां समाप्त हो जाएंगी। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने वालों में चोर, डाकू, फासिक, तथा फाजिर जुआरी शराब पीने वाले इत्यादि बुराइयों में लिप्त लोग भी थे। वास्तविक ईमान ने उन में फैसला करने की शक्ति पैदा कर दी। उन्होंने यह फैसला कर लिया कि अब ख़ुदा तआला के आदेशों के ख़िलाफ कोई क़दम नहीं उठाना। उन्होंने अपने कर्मों की कमी को इस तरह दूर फेंका जिस तरह एक तेज़ सैलाब की लहर एक तिनके को बाहर ले जाती है व्यावहारिक सुधार के हवाले से यह ख़िताब किताब की शक्ल में छप चुके हैं इन्हें पढ़ें ताकि सब बातें दोबारा दिमाग़ों में याद आ जाऐं और फिर उन पर सहाबा की तरह मज़बूत इरादा से अनुकरण किया जा सके।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की शिक्षाओं से पता चलता है कि दुनिया की दौलतें कुछ चीज़ नहीं हैं ख़ुदा तआला से उस की प्रसन्नता, उस के फज़्ल तथा ईमान पर स्थापित रहने की दुआ मांगते रहना चाहिए। अत: आप फरमाते हैं कि

" ख़ुश किस्मत वे आदमी नहीं जिस को दुनिया की दौलत मिले और वह इस दौलत के द्वारा हज़ारों आफतों और मुसीबतों को पाने वाला बन जाए बल्कि ख़ुश किस्मत वे है जिस को ईमान की दौलत मिले और वह ख़ुदा तआला की नाराज़गी तथा क्रोध से डरता रहे। और हमेशा अपने आप को नफ्स तथा शैतान के हमलों से बचाता रहे क्योंकि ख़ुदा तआला की प्रसन्नता को वह इस प्रकार प्राप्त करेगा मगर याद रखो कि यह बात इसी प्रकार प्राप्त नहीं हो सकती इस के लिए ज़रूरी है कि तुम नमाज़ों में दुआएं करो ख़ुदा तआला तुम से राज़ी हो जाए और वह तुम्हें शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान करे तुम गुनाह वाले जीवन से मुक्ति पाओ.... जो गुनाह की फिक्र नहीं करते और ख़ुदा तआला से नहीं डरते वे पवित्र नहीं हो सकते।"(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 608)

अल्लाह तआला आपको इन बातों पर अनुकरण करने की तौफीक़ प्रदान करे आमीन

वस्सलाम, ख़ाकसार

मिर्ज़ा मसरूर अहमद,

ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़ुत्बः जुमअः

*** ... अल्लाह तआला ने भी उधार नहीं रखा।**

*** ... हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम को मानने वाला बड़ी अच्छी तरह समझ सकता है कि अल्लाह तआला ने अपने फज़्ल से बिना किसी सांसारिक कारण के अपने रास्ते में कुरबानी की वजह से यह बरकत प्रदान की है।**

*** ... मुझे यकीन था कि अल्लाह तआला इस का प्रबंध कर देगा, लेकिन यह नहीं पता था कि अल्लाह तआला 24 घंटे गुज़रने नहीं देगा और प्रबन्ध कर देगा।**

*** ... पहले मैं ऐसी घटनाओं को सुना करता था और सोचता था कि अल्लाह तआला वास्तव में अपने बन्दों से इस तरह का व्यवहार करता है, लेकिन अब मुझे ख़ुद अनुभव हो गया है।**

*** ... हमें इस छोटे बच्चे की इस अदा पर बड़ा प्यार आया कि छोटी सी आयु में वित्तीय कुरबानी की कितना शौक है।**

*** ... इस बार मैं अपनी जेब से खर्च अदा नहीं कर पाया इसलिए मैं चाहता हूं कि आज काम करूं और जो रक़म मिले उसे चन्दा में अदा करूं।**

*** ... यही श्रद्धा और अल्लाह तआला पर भरोसा और उसके वादों पर विश्वास है, जो दूसरों को भी इस्लाम की सच्चाई के बारे में सोचने के लिए मजबूर कर रहा है।**

तहरीक जदीद के 84 वें वर्ष (2017-2018) के दौरान, विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया को 1 करोड़ 27 लाख 93 हज़ार पाउंड अल्लाह तआला के समक्ष पेश करने की तौफीक़ मिली ।

वैश्विक स्थिति की दृष्टि से पाकिस्तान प्रथम स्थान पर और इस के बाद जर्मनी , बर्तानिया और अमरीका है
प्रति व्यक्ति अदा करने के मामला में स्विट्ज़रलैंड, अफ्रीका के देशों में कुल अदायगी के मामले में घाना, शामिल होने वालों में वृद्धि की दृष्टि से अफ्रीका के देशों में नीइजेरिया जब कि बड़ी जमाअत में इंडोनेशिया की प्रथम नम्बर पर है

विभिन्न पहलुओं से पाकिस्तान, जर्मनी, ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, भारत और ऑस्ट्रेलिया की आदर्श कुरबानी करना वाली जमाअतों की समीक्षा।

तहरीक जदीद के 50वें साल के आरम्भ के अवसर पर धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने का वादा निभाने वाले जमाअत के श्रद्धालुओं की माली कुरबानी के ईमान वर्धक घटनाएं।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 9 नवम्बर 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۔ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ۔

(البقرۃ262:-263)

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ۔ **(البقرۃ266:)**

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ۔ **(البقرۃ269:)**

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ۔ **(البقرۃ273:)**

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ۔ **(البقرۃ275:)**

ये आयतें जो मैं ने वर्णन की हैं सूरत अलबकर की आयतें हैं जिन में माल की कुरबानी का वर्णन है और कुरबानियों के हवाले से लगभग एक क्रम में अल्लाह तआला ने उन्हें यहां वर्णन किया है इन का अनुवाद यह है

उन लोगों का उदाहरण जो अपना माल अल्लाह तआला के मार्ग में खर्च करते हैं इस प्रकार के बीज की तरह है जो सात बालें उगाता है। प्रत्येक बाली में 100 दानें हों और अल्लाह जिसे चाहे बहुत बढ़ा कर देता है। और अल्लाह तआला बहुत व्यापक तथा स्थायी ज्ञान रखने वाला है।

फिर अगली आयत में फरमाया कि वे लोग जो अपने माल अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करते हैं तो जो वे खर्च करते हैं उसका एहसान जताते हुए या बेचैनी देते हुए पीछा नहीं करते उनका इनाम उन के रब्ब के पास है और उन पर कोई डर नहीं होगा, और न ही वे दुखी होंगे।

फिर फरमाता है अनुवाद इस का यह है कि उन लोगों का उदाहरण जो अपने माल अल्लाह की राह में उस की प्रसन्नता चाहते हुए अपने नफ्सों में से कुछ को दृढ़ता देने के लिए खर्च करते हैं इस तरह कि बाग़ की तरह हैं जो ऊंचे स्थान पर स्थापित हो और उस को तेज़ बारिश पहुंचे तो वे बढ़ चढ़कर अपना फल लाए और अगर उस को बारिश न पहुंचे तो शबनम ही बहुत हो और अल्लाह उस पर जो तुम करते हो गहरी नज़र रखने वाला है।

फिर अगली आयत में फरमाता है कि शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है और तुम्हें फहशा का आदेश देता है जबकि अल्लाह तआला तुम्हारे साथ अपनी जनाब से माफी और फज़्ल का वादा करता है और अल्लाह तआला सुविधाएं प्रदान करने वाला और स्थायी ज्ञान रखने वाला है।

फिर अल्लाह तआला फरमाता है। उन्हें मार्गदर्शन देना तुझ पर अनिवार्य नहीं है, लेकिन अल्लाह तआला जिसे चाहता है मार्ग दर्शन देता है। और जो भी तुम माल में से खर्च करो वह तुम्हारे अपने ही लाभ के लिए है जबकि तुम अल्लाह तआला की प्रसन्नता के अतिरिक्त कुछ नहीं खर्च करते और जो भी तुम माल में से खर्च करो वह तुम्हें भरपूर वापस कर दिया जाएगा और हरगिज़ तुम से कोई दुर्व्यवहार नहीं किया जाएगा।

फिर फरमाया कि वे लोग जो अपने मालों को खर्च करते हैं रात में भी दिन में भी छुप कर भी और खुलेआम भी तो उनके लिए इनाम उन के रब्ब के पास है

और उन पर कोई डर नहीं होगा और न वे दुखी होंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वित्तीय कुरबानी का ज़िक्र करते हुए एक अवसर पर फरमाते हैं कि:

" मैं जो बार बार ताकीद करता हूँ कि ख़ुदा तआला की राह में खर्च करो। यह ख़ुदा तआला के आदेश से है। ... इस्लाम दूसरे विरोधी धर्मों का शिकार बन रहा है। ... चाहते हैं कि इस्लाम का नामो निशान मिटा दें जब यह हालत हो गई है तो क्या अब इस्लाम के विकास के लिए हम कदम न उठाएं? अल्लाह तआला ने इस उद्देश्य के लिए इस सिलसिला को बनाया है। अत: इसके विकास के लिए कोशिश करना यह अल्लाह तआला के आदेश और इच्छा का अनुपालन है।" फरमाया: " ये वादे भी ख़ुदा तआला की तरफ से हैं कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला के लिए देगा मैं उस को कुछ गुना बरकत दूंगा। दुनिया ही में उसे बहुत कुछ मिलेगा और मरने के बाद आख़रत का बदला भी देख लेगा कि कितने आराम मयस्सर आते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात जल्द 8 पृष्ठ 393-394। संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला मुख़लेसीन की जमाअत प्रदान की जिसने आप की बात को सुना और लब्बैक कहा और कुरबानियां दीं। अत: इन कुरबानी के बारे में हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं:

"हमारी जमाअत का बड़ा हिस्सा ग़रीबों का है। लेकिन अल्लाह तआला का शुक्र है कि बावजूद यह ग़रीबों की जमाअत है लेकिन मैं देखता हूँ कि उन में सिदक और सहानुभूति है और वे इस्लाम की आवश्यकताओं समझकर यथा योग्य इसके लिए खर्च करने से फर्क नहीं करते।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 8 पृष्ठ 393-394 प्रकाशन 1985 मुद्रित यू.के)

अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा स्थापित जमाअत के लोगों को केवल आप के जीवन में ही कुरबानी और ईमानदारी और बैअत में नहीं बढ़ाया बल्कि अल्लाह तआला ने अपने वादे के अनुसार आज से लगभग एक सौ साल पहले, जिस जमाअत की स्थापना फरमाई थी उस जमाअत में इस प्रकार कुरबानी करने वाले प्रदान करता रहा है और फरमा रहा है जो धर्म के लिए, अपनी शक्ति तथा सामर्थ्य से बढ़ कर कुरबानियां कर रहे हैं। और उन मानकों पर भी पूरा उतर रहे हैं और उन वादों से भी हिस्सा ले रहे हैं जो अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में फरमाए हैं। यह गुणवत्ता आज अल्लाह तआला की कृपा से केवल अल्लाह तआला की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से स्थापित इस जमाअत में ही नज़र आते हैं जिस के कुछ उदाहरण इस जमाने के में प्रस्तुत करता हूं। ये घटनाएं दुनिया के विभिन्न देशों में फैले हुए लोगों के हैं जो इस वादा को निभा रहे हैं कि हम धर्म को दुनिया में प्राथमिकता करते हुए अपना माल प्रस्तुत करने के लिए हर समय तैयार हैं।

अत: पहले कैमरून की एक घटना है। वहाँ के मुअल्लिम लिखते हैं कि जब हम पश्चिमी क्षेत्र की एक जमाअत मारता में चंदा तहरीक जदीद के सिलसिले में गए तो वहां के मुख्यमंत्री साहाम उस्मान साहिब ने गांव के लोगों को इकट्ठा किया और कहने लगे कि जमाअत के मुअल्लिम साहिब चंदा तहरीक जदीद के लिए आए हैं और सब वित्तीय कुरबानी में भाग लें। चीफ कहने लगे क्योंकि आज से दो साल पहले मैं अकेला या कभी कभी दो या तीन आदमी मेरे साथ मस्जिद में नमाज़ पढ़ते थे लेकिन जब से इस गांव में जमाअत अहमदिया स्थापित हुई है और हम ने इस चूंकि जमाअत को स्वीकार किया है तब से हमारी मस्जिद नमाज़ियों से भरनी शुरू हो गई है। और कभी कभी तो नमाज़ियों को मस्जिद के अंदर जगह न होने की वजह से बाहर नमाज़ पढ़ने पड़ती है वे कहने लगा यह क़ाफी परिवर्तन केवल जमाअत अहमदिया के यहां आने से आए हैं। इसलिए, हमें जमाअत की हर तहरीक में भाग लेना चाहिए।

यह इंकलाब जो अहमदियत के द्वारा उन में आ रह है और वित्तीय कुरबानियों में बढ़ रहे हैं। और यह सब उन पुराने अहमदियों को भी ध्यान दिलाने वाला है जिनका ध्यान इबादतों में कम हो रहा है और बावजूद स्थिति अच्छी होने के वित्तीय कुरबानियों की तरफ भी कम है।

फिर कैमरून के एक मुअल्लिम अबूबकर वर्णन करते हैं कि कैमरून के अत्याधिक उत्तर में स्थित जमाअत माडीबो में तहरीक जदीद के चंदा की तहरीक के लिए गए और घर घर जाकर नोम्बाईन को चंदे की तहरीक की। उस पर एक अहमदी उस्मानी साहिब ने बयान किया कि जब आप पिछली बार चंदा के लिए तहरीक कर रहे थे तो मैंने इरादा था कि दस हज़ार फ्रैंक सीफह (CFA Frank)अदा करूंगा और मक्की भी दूंगा। इसके कुछ दिन बाद मेरे बेटे ने कहा कि वह कस्टम विभाग में नौकरी के लिए साक्षात्कार में जाना चाहता है लेकिन इसके लिए बहुत बड़ी राशि की ज़रूरत है। वहां भी तीसरी दुनिया के लोगों की तरह नौकरियां पाने के लिए अधिकारी को कुछ देना पड़ता हैं। इसलिए मैंने अपने बेटे से कहा कि मैं एक ग़रीब आदमी हूं। मैं इतनी बड़ी राशि का प्रबंध नहीं कर सकता। मेरे पास तो दस हज़ार फ्रैंक सीफह है और यह मैंने तहरीक जदीद में अदा करने का वादा किया है इसलिए तुम जाओ और नौकरी का साक्षात्कार दे दो। अल्लाह तआला तुम्हारी मदद करेगा। उस्मान साहिब बताते हैं कि मैंने वह राशि चंदा में अदा कर दिया और उसके कुछ दिन बाद ही मेरे बेटे का शहर से फोन आया कि मैं साक्षात्कार में पास हो गया हूं और जल्द ही मुझे नौकरी मिल जाएगी। अल्लाह तआला ने वहां अधिकारियों का दिल ऐसा फेरा कि बहुत कुछ देने वालों को नौकरी नहीं मिली और बेटे के लिए उसकी प्रार्थनाओं और नेक इरादे और कुरबानी की वजह से अल्लाह तआला ने नौकरी का प्रबंध कर दिया।

फिर जाम्बिया के अमीर साहिब लिखते हैं कि नियामे ज़िला के एक गांव में तहरीक जदीद के संदर्भ में कार्यक्रम आयोजित किया गया और इसमें बताया गया कि समय के ख़लीफा ने यह कहा है कि सभी नौ मुबाईन इस तहरीक का हिस्सा बनें। तो वहां मौजूद सभी लोगों ने चन्दा अदा किया। एक महिला कोजा बाए साहिबा ने कहा कि उस ने इज्लास के दौरान बीस डलासी चन्दा अदा किया था। उनके पास उस समय केवल बीस डलासी ही थे जो उन्होंने मुश्किल दिनों के लिए संभाल कर रखे थे। वह वर्णन करती हैं कि जब वह घर पहुंचीं, तो उनके मेहमानों में से एक ने उन्हें पांच सौ रुपये का तोहफा दिया। तो अगली सुबह, वह मस्जिद में फिर से आईं और पचास से अधिक डलासी चन्दा में अदा कर दिए और कहने लग गईं कि यह पैसा केवल चन्दा की बरकत के कारण से ही मुझे मिला है। अल्लाह तआला का वापसी का वादा जो है वह भी उन के ईमान तथा विश्वास में वृद्धि का कारण है। यद्यपि उन्होंने कुरबानी इस नियत से नहीं की थी कि मुझे अल्लाह तआला वापस या तुरंत दे देंगे, लेकिन अल्लाह तआला ने भी उधार नहीं रखा था।

फिर बेनिन क्षेत्र के मुबल्लिग़ के पत्र में कहा गया है कि यहां इस शहर में, जमाअत के सैक्रेटरी माल का जो पैसे कमाने का माध्यम था वह एक तीन पहियों वाली बाइक या मोटरसाइकिल थी जो चोरी हो गई। और अफ्रीका में प्राय: जो चीज़ चोरी हो जाए उस का मिलना असंभव होता है। जब उनके दोस्त उनसे मिलने आते और चोरी का सुनने के बाद खेद व्यक्त करते, तो उन के भरोसा की जो अवस्था है वह देखें, वह कहते कि मुझे अल्लाह तआला की हस्ती पर पूर्ण विश्वास है। क्योंकि मैं एक ग़रीब आदमी हूं और इस बाइक द्वारा कमा कर अपने बच्चों का पेट पालता हूँ और समय पर अपना चंदा अदा करता हूँ इसलिए शायद किसी को मुझ से ज्यादा ज़रूरत है तो अल्लाह तआला ने अस्थायी तौर पर इस के लिए प्रबंध कर दिया ताकि वह अपनी ज़रूरत पूरी कर के मुझ वापस कर जाए। यह सुनकर, लोगों ने सोचा कि उन्हें चोरी का बहुत अधिक दु:ख हुआ था और यही कारण है कि उनके दिमाग पर थोड़ा असर पड़ा है। हालांकि, उन्होंने राष्ट्रीय कानून की मांग को पूरा करने के लिए पुलिस में भी सूचना दी और आराम से घर में बैठ गए। कहते हैं दो सप्ताह गुज़र गए उन को पड़ोसी जो ख़ुद भी मोटर साइकिल या रिक्शा चलाता था उस ने ग़नो साहिब को फोन किया कि मैंने आपकी बाइक देखी, रिक्शा देखा है लेकिन इसका रंग बदल गया है। इसलिए जब पुलिस को इसके बारे में सूचित किया गया, तो पुलिस ने मालिकों से मोटरसाइकिल के असल पेपर को लेकर पुलिस स्टेशन पेश करने के लिए कहा। तहकीक़ करने पर इस आदमी को जा पेपर थे वह नक्ली साबित हुए। पुलिस ने उस व्यक्ति को कहा कि वह दो दिनों में बाइक की मरम्मत करे और पहले वाला रंग करे और उसे मालिक को सौंप दे। और फिर यह बाइक फिर से उनके पास लौट आई। वह बाइक लेकर तुरंत मिशन हाउस आए और सारी घटनाओं का वर्णन किया और कहा कि अभी मेरा तहरीक का चन्दा अदा होना बाकी है। मैं अब काम की तलाश में जा रहा हूं और इस हफ्ते जो भी मुनाफा आएगा मैं तहरीक जदीद का चन्दा अदा करूंगा क्योंकि चन्दे की बरकत से यह मोटर साईकिल मुझे मिली है अत: उन्होंने एक सप्ताह में तहरीक जदीद में बारह हज़ार फ्रैंक सीफा चन्दा अदा किया। यह अल्लाह तआला पर भरोसा और ईमान की एक अजीब शान है।

भारत से इंस्पेक्टर तहरीक जदीद शहाब साहिब लिखते हैं कि जमाअत

अहमदिया चिन्टा कुन्टा की एक लड़की सोफिया बेगम ने अपने भाई के हाथ संदेश भेजा कि जब मैं बहुत छोटी थी तो माँ के साथ जलसों में जाया करती थी और उल्मा के भाषणों में सुना करती थी जब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला ने तहरीक जदीद की बुनियाद रखी तो उस के लिए आर्थिक कुरबानियों की तहरीक फरमाई तो बहुत सी औरतों ने हुज़ूर की सेवा में अपने ज़ेवर उतार कर पेश किए। जब भी मैं यह ईमान वर्धक घटना सुनती तो मेरे दिल में यह इच्छा पैदा होती कि काश मेरे पास भी ज़ेवर होते और मैं इसे चन्दा तहरीक जदीद में अदा करती। परन्तु ग़रीबी के कारण से यह मेरे लिए संभव नहीं था। लेकिन अब मुझे अपनी मां की मृत्यु के बाद दो तोले सोना हिस्सा में मिला है और वह मैं पेश करती हूं क्योंकि पता है कि इस के बाद मेरे ज़ेवर रहे या न रहे। कहते हैं उन्होंने उस समझाया, इंस्पेक्टर साहिब ने भी कहा कि आप की शादी होनी है ज़ेवर की आवश्यकता होगी, लेकिन वह ज़ोर देती रहीं और दो तौला सोना की क़ीमत चन्दा तहरीक जदीद में अदा कर दी। अभी पिछले जुम्अ: में मैंने संयुक्त राज्य अमेरिका में यह कहा था और हमेशा कहता रहता हूं कि अक्सर गरीब वित्तीय कुरबानियां दे रहे हैं, लेकिन अच्छी परिस्थितियों वाले समृद्ध लोगों को उनकी स्थिति को देखना चाहिए कि उनके कुरबानी के स्तर क्या हैं जिन के बारे में अल्लाह तआला फरमाया है कि ऐसे मानक होने चाहिए और फिर उन्हें स्वीकार भी करता है।

भारत से ही इन्सपैक्टर तहरीक जदीद कर्नाटक लिखते हैं कि एक दोस्त का चन्दा तहरीक जदीद का अढ़ाई हज़ार रुपए अदा होना बाकी था। उन से अदा करने का निवेदन किया गया कि तहरीक जदीद का साल समाप्त होने में थोड़े दिन रह गए हैं। इस पर महोदय ने कहा कि बारिश की वजह से पिछले तीन महीने से काम बिल्कुल बंद है और आय की भी कोई उम्मीद नहीं दिख रही तो उस पर कहते हैं मैं उन्हें कहा कि अदा करने का इरादा कर लें और ख़ुदा तआला से दुआ करें। मैं यह कह कर अगली जगह गया था। जब शाम को वहां पर दूसरे स्थान से दौरे पर वापस आया, तो महोदय ख़ुद मिशन हाउस में आए और अपना पूरी चन्दा आदा कर दिया। मैंने उनसे पूछा कि यह इतनी जल्दी कहां से हो गया। कहने लगे कि बस यह इरादा की बरकत है और चंदा देने की बरकत है और अल्लाह तआला की कृपा है कि मैं दुआ भी की और एक आदमी ने कुछ समय से मेरे कुछ पैसे देने थे और कई महीने से चक्कर लगा रहा था वह नहीं दे रहा था लेकिन आज अचानक मेरे घर आया और मेरा पैसा वापस कर दिया।

फिर तंज़ानिया से मुअल्लिम मूसा साहिब लिखते हैं कि दारुस्सलाम जमाअत के एक अत्यंत निष्ठावान अहमदी दोस्त हैं और जमाअत के दफ़्तर में सेवा भी कर रहे हैं उनकी हर साल की कोशिश होती है कि अपना और परिवार का तहरीक जदीद और वक्फे जदीद की अदायगी रमज़ान से पहले कर दें लेकिन इस साल, घरेलू परिस्थितियों के कारण उन्होंने वादा अदा न कर सके इस कारण से बहुत परेशान थे बहरहाल उन्होंने दुआ की कि अल्लाह तआला स्वयं मेरे लिए कोई रास्ता निकाल दे। कहते हैं कि ईद के अवसर पर जमाअत द्वारा जमाअत के कार्यकर्ताओं को ईदी मिलती हे उन्होंने सोचा कि जो ईद का तोहफा मिलना है इस तोहफा से अपनी ईद की ज़रूरतों को पूरा करने के बजाय चंदा दे दूंगा लेकिन जब उन्होंने हिसाब लगाया तो जो ईद का उपहार आमतौर पर मिला करता था उस को देने के बाद भी बकाया रह जाना था। इस पर उन्होंने ख़ुदा तआला से दुआ की कि अल्लाह तआला कहीं से सामान पैदा कर दे ताकि वह अपने वादे के अनुसार अदा कर सकें। अत: यह कहते हैं कि इस बार ईदी मिली तो यह आम तौर पर मिलने वाली राशि से अधिक था, इसलिए उन्होंने अपने सभी वादों को अदा किया जो उन्होंने किए थे।

मॉस्को के मुबल्लिग़ रिज़वी साहिब लिखते हैं कि एक नए अहमदी दोस्त वादम साहिब का सम्बन्ध रशिया के एक दूर के खुले और पिछड़े क्षेत्र से है। उन्हें 2017 में अहमदियत को स्वीकार करने की तौफीक़ मिली। इस साल मार्च में एक महीने के लिए आए कि अहमदी भाइयों से मुलाकात हो और शिक्षा और प्रशिक्षण से लाभ पा सकें। यह ग़रीब घराने से सम्बन्ध रखने वाले थे वित्तीय तंगी के कारण कई बार बहुत कठिन अवस्था से गुज़रना पड़ता था। मास्को में रहने के दौरान मॉस्को के प्रवास के दौरान बातचीत के दौरान, उन्हें वित्तीय प्रणाली और जमाअत से संबंधित गतिविधियों के बारे में अधिक बताया गया था, और कुछ चन्दा देने के लिए भी प्रेरित किया गया था। उनके सीमित संसाधनों और ग़रीबी के कारण, यह विचार था कि यदि वे उन्हें पचास रूबल भई देते हैं, तो यह उनके लिए एक बहुत त्याग है। अगले दिन सुबह की नमाज़ के बाद उन्होंने चंदा तहरीक जदीद और वक्फ जदीद के लिए दो हज़ार रूबल दिए और कहा कि मेरी तरफ से चंदा स्वीकार कर लें और साथ बार बार अफसोस करते रहे कि मैंने पहले क्यों चंदा नहीं दिया और मैंने इतनी देर क्यों कर दी साल से अधिक मुझे अहमदी हुए हो गया है। मुबल्लिग़ लिखते हैं कि उनकी परिस्थितियों के अनुसार यह एक महान त्याग था।

यह हैं कुरबानी की गुणवत्ता और यह हैं वे लोग जिनके बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया है कि आश्चर्य होता है उनकी ईमानदारी और निष्ठा को देखकर।

(मल्फूज़ात जिल्द 10 पृष्ठ 334 संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

फिर मास्को से ही मुबल्लिग़ सिलसिला लिखते हैं कि जमाअत मास्को के एक सदस्य हैं, एक लंबा समय से मास्को में विभिन्न संस्थानों में नौकरी कर रहे हैं। उस स्थान में जहां वह वर्तमान में काम कर रहें है, उन्होंने कहा कि मुझे साक्षात्कार देने के दौरान, मालिकों ने बताया था कि हमारे यहां वेतन में वृद्धि नहीं होती है। जो वेतन दिया जाएगा उसी पर हमेशा तुम्हें गुज़ारा करना होगा, इसलिए यदि तुम्हें यह वेतन उचित लगे तो नौकरी करो वरना नौकरी न करें। मैंने नौकरी कर ली। कुछ समय बाद तहरीक जदीद और वक्फे जदीद की तहरीक की गई। मैंने नियमित रूप से इन तहरीकों में चन्दा देना शुरू कर दिया। कुछ दिनों में, इस संस्थान के प्रशासन ने मुझे बुलाया और बिना किसी कारण के मेरे वेतन में पहले पांच हज़ार रूबल की वृद्धि हुई। और फिर कुछ समय बाद, और दो हज़ार से rubles जोड़ दिए। ऐसा कहा जाता है कि मुझे विश्वास था कि यह केवल अल्लाह तआला के रास्ते में वित्तीय कुरबानी का परिणाम था अन्यथा ऐसा कोई कारण नहीं था। और कहते हैं जब किसी ग़ैर अहमदी को इस बारे में बताने की कोशिश तो उन्हें इस बात की पूरी समझ नहीं आती लेकिन हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम को मानने वाला बड़ी अच्छी तरह समझ सकता है कि अल्लाह तआला ने अपने फज़ल से बिना किसी सांसारिक कारण के इस तरह से कुरबानी के कारण से बरकत प्रदान की।

बेनिन के क्षेत्र अलाडा के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि क्षेत्र की एक जमाअत फ़ानजी जहां अल्हम्दो लिल्लाह जमाअत की मस्जिद भी बनी हुई है,यहाँ के सदर साहिब जमाअत जो एक लोहार हैं उन्हें तहरीक जदीद में बढ़चढ़ कर भाग लेने तहरीक किया गया तो उन्होंने उन्होंने अधिक अदा करने का वादा तो कर लिया लेकिन कहा कि वर्तमान में काम न होने के कारण हाथ तंग है। इसके बाद सदर साहिब का साहिब का फोन आया कि मैंने दस हज़ार फ्रैंक सीफह चंदा देना है उसकी रसीद काट दें। कहते अल्लाह तआला ने इस वादे के बाद बड़ा फज़्ल किया और मुझे काम मिल गया और अब मैं दस हज़ार चंदा देने आ रहा हूँ और कहते हैं इस अदा करने के कोई पंद्रह दिन बाद फिर उनका फोन आया कि अल्लाह तआला का बहुत फज़्ल हुआ है और इतना अधिक हो गया है कि समझ नहीं आ रही कि शायद समय पर काम पूरा भी कर सकूँ या नहीं। बहुत बड़ा काम मिल गया है और यह केवल तथा केवल अल्लाह तआला के रास्ते में वित्तीय कुरबानी करने के कारण हुआ है। मानो कि अल्लाह तआला अपने वादे के अनुसार कई गुणा बढ़ाकर प्रदान किया है, और इसे तुरंत दे रहा है।

माली के सागो क्षेत्र मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक दिन एक अंधी महिला ने कुछ चन्दा भिजवाया और साथ ही सन्देश भिजवाया कि वह भविष्य में अपना चन्दा हर महीने मिशन हाऊस भेजा करेगी। उन से इस का कारण पूछा गया तो उन्होंने कहा, कि कुछ लोगों को अल्लाह तआला ख़ुद ध्यान दिलाकर कुरबानी करवाता है ताकि और प्रदान करे। कहती हैं कि दो दिन पहले मैंने सपने में देखा कि मैं सो रही हूं और ख़वाब में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुझे जगा कर चन्दा अदा करने की नसीहत की तो मैं सपने में उठ कर मिशन हाउस गई और वहां पांच हज़ार सीफा अदा किया और फिर मेरी आंखें खुली गई।

बोर्कीना फासो से मुबारक मुनीर साहिब मुबल्लिग़ लिखते हैं कि पीगो जमाअत एक निष्ठावान अहमदी अल्हाज इब्राहीम के दो बच्चे कुछ समय से बीमार थे। उनका बहुत इलाज किया गया लेकिन सुधार नहीं हो रहा हुआ था। एक दिन, हमारे मुअल्लिम ने उन्हें वित्तीय कुरबानी की नसीहत की, तो उन्होंने अपनी योग्यता के अनुसार चन्दा दिया और दुआ की, हे अल्लाह, मेरे कुरबानियों को स्वीकार कर और मेरे बच्चों को स्वस्थ बना दे। कहते हैं कि कुछ दिनों बाद ही अल्लाह तआला की कृपा से उनके बच्चों की हालत अच्छी होने लगी। एक बच्चा तो बिल्कुल ठीक हो गया और दूसरे बच्चे में बहुत सुधार है। उन को यह

विश्वास है कि अल्लाह तआला ने इस कुरबानी को स्वीकार करते हुए यह बरकत प्रदान की है।

बोर्कीना फासो के बोबो शहर के सैक्रेटरी वसीयत कहते हैं कि मैं वसीयत का चंदा तो हर महीने अदा कर देता था लेकिन तहरीक जदीद और वक्फ जदीद में कभी कभी देर हो जाया करती थी। एक बार जब उन्होंने मेरा ख़ुत्बा सुना, तो उन के दिल में एक विचार आया कि क्यों न साल समाप्त होने से पहले ही समय पर चन्दा अदा कर दिया जाए। अत:कुछ महीने अदा करने के बाद एक रात को सपने में देखा कि एक सफेद पोशाक पहने हुए एक आदमी मुझे कोई चाबी पकड़ा रहा है। मुझे उस समय सपने को समझ में नहीं आई, लेकिन कुछ दिनों बाद मेरे भाई की तरफ से संदेश आया कि आप हज करने के लिए तैयारी करें मैं आप को सभी खर्च दूंगा। इस प्रकार, वित्तीय कुरबानी के बाद, अल्लाह तआला ने हज्ज करने की तौफीक प्रदान की।

जर्मनी के सैक्रेट्री तहरीक जदीद लिखते हैं, कि बोर्कन जमाअत के एक मित्र तहरीक के चन्दे में नौ सौ यूरो की वृद्धि की। यह दोस्त मुझे बताते हैं कि जिस दिन मैंने वादा किया उस के अगले दिन फर्म में गया, मालिक ने कहा कि मैंने आपके वेतन में सौ यूरो वृद्धि की है। और फरवरी से अक्टूबर तक, हिसाब लगाया तो कुल नौ सौ यूरो बनते हैं। यह दोस्त कहते हैं कि मुझे यकीन था कि अल्लाह तआला इसका प्रबन्ध करेगा लेकिन यह नहीं पता था कि अल्लाह तआला इसे 24 घंटे भी गुज़रने नहीं देगा और प्रबन्ध कर देगा।

जर्मनी के सैक्रेट्री तहरीक जदीद ही वर्णन करते हैं कि एक दोस्त अपने असाइलम के कारण परेशान थे। उन्हें वित्तीय कुरबानी और तहरीक जदीद के चन्दा के अदा करने की तरफ ध्यान दिलाया गया। इस के कुछ दिन बाद ही दोस्त मिले और उन्होंने बताया कि आप ने मुझे चन्दा तहरीक जदीद की तरफ ध्यान दिलाया था मैंने सौ यूरो का वादा किया था उस समय मेरे पास केवल बीस यूरो थे अत: मैंने बीस यूरो उसी समय अदा कर दिए। और घर चला गया। घर गया तो जहां मैं पहले काम करता था वहां से फोन आया कि तुम्हारे हिसाब में कुछ पैसे बनते हैं वह आकर ले जाओ। मेरा विचार था कि तीन या चार सौ यूरो मिलेंगे परन्तु वहां से जो पैसे मिले वह मैंने गिने बिना ही जेब में डाल लिए। और सब से पहले मैंने तहरीक जदीद के बकाया अस्सी यूरो अदा किए फिर बाकी ज़रूरतों के लिए पैसे निकाले इसके बाद भी कुछ रक़म बच गई। जब मैं हिसाब किया तो पता चला कि वहां से एक हज़ार यूरो मिला था कहते हैं मैंने सौ यूरो का वादा किया था अल्लाह तआला ने उस के बदले में दस गुना दिया पहले मैं इस प्रकार की घटनाएं सुना करता था और सोचा करता था कि अल्लाह तआला वास्तव में अपने बन्दों के साथ इस प्रकार का व्यवहार करता है परन्तु अब मुझे ख़ुद अनुभव हो गया था।

आइवरी कोस्ट से मुबल्लिग़ सिलसिला लिखते हैं कि वहाँ तहरीक जदीद चंदा के सिलसिले में एक जगह गए, नोम्बाईन की जमाअत है, एक साल पहले ही बैअत कर के जमाअत की प्रणाली में ये सारे लोग शामिल हुए हैं। इस गांव में तहरीक जदीद के महत्व पर तकरीर की गई, उसके उद्देश्यों को वर्णन किया और यह बताया कि ख़लीफतुल मसीह ने कहा है कि सभी लोगों को इस बरकत में भाग लें। अगले दिन सुबह की नमाज़ के बाद जमाअत के दोस्तों ने अपने सामर्थ्य के अनुसार चंदा देना शुरू किया और इमाम साहिब मस्जिद भी इस नेक काम में भाग लिया और अपने परिवार की तरफ से भी तहरीक जदीद की चंदा अदा किया। फिर बाद में, उनका छह वर्षीय बेटे ने अपने पिता से 100 सीफा उधार लेकर आया और कहने लगा कि यह मेरा चन्दा है कहते हैं कि हमें इस छोटे बच्चे की अदा पर बड़ा प्यार आया कि छोटी उम्र में माली कुरबानी का कितना शौक है। अल्लाह तआला इन नौमुबाईन की कुरबानियों को स्वीकार करे और धर्म और दुनिया की बरकतों से हिस्सा दे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम से एक जगह उल्लेख किया गया है कि एक अवसर पर एक मौलवी ने मस्जिद में वित्तीय कुरबानी की तहरीक की तो वहाँ उसकी पत्नी भी बैठी हुई थी। यह सुनकर, उस पर बड़ा प्रभाव हुआ और घर आने उसने भी इस उद्देश्य के लिए अपना ज़ेवर उतार कर दे दिया। मौलवी ने कहा कि यह केवल लोगों के लिए सुनाने के लिए था तुम्हारे नहीं था। तुम कुरबानी न करो।

(मल्फूज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 264-265 संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

लेकिन यहाँ जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की जमाअत पैदा हो रही है इस में ख़ुद मौलवी बल्कि उनके बच्चे भी उत्साह से भाग ले रहे हैं।

इंडोनेशिया का एक उदाहरण है, वहाँ एक महिला सोफिया साहिबा लिखती हैं कि मैं 2014 में ईसाई धर्म से बैअत कर के जमाअत में शामिल हुई थी और बैअत के बाद मेरा ईसाई परिवार की ओर से विरोध शुरू हो गया। मैं दुखी थी। मुझे अपमानित किया जाता था। घर वाले सोचते थे कि मैं उनके परिवार का हिस्सा नहीं थी लेकिन मुझे जमाअत से बहुत प्यार और मुहब्बत मिली। मेरी शादी भी एक अहमदी से हो गया। थोड़ी देर बाद मेरे पति की कार दुर्घटनाग्रस्त हो गई और बाएं पैर और बाएं पैर की हड्डी टूट गई। उस समय मैं चार महीने की गर्भावस्था भी थी। इस बीच, तहरीक जदीद का नया साल शुरू हो गया। जब मैंने अपने पति से पूछा, तो उन्होंने बहुत भरोसा से कहा कि पांच लाख इंडोनेशियाई रुपए चन्दा लिखवा दो क्योंकि मुझे अगले साल नौकरियां मिल जाएगी। इंडोनेशियाई रुपये के बहुत कम मूल्य है, लेकिन वहां रहने वाले लोगों के लिए, उनके पास बहुत मूल्य है। वह औरत कहती है, मैं देखकर आश्चर्यचकित हूं कि अभी लाठियों के सहारे चलते हैं नौकरी कैसे मिल सकती है बहरहाल उन के कहने के अनुसार मैंने वादा लिखवा दिया। समय तेजी से गुज़रता गया। हम नहीं जानते थे कि साल खत्म हो रहा है। यह एक बड़ी समस्या थी कि मेरे पति अब तक बेरोज़गार थे चन्दा कहां से अदा करेंगे। इसी परेशानी की स्थिति में दुआ की तो अल्लाह तआला ने अपने सामर्थ्य दिखाया और कहती हैं कि मेरे पति को एक निजी कंपनी में अच्छी नौकरी मिल गई और हम ने वादा के अनुसार सौ प्रतिशत अदा कर दिया।

इंडोनेशिया से ही वारदी साहिब लिखते हैं कि हमारा परिवार पिछले रमज़ान में एक कठिन परिस्थिति में था। मेरी सास बीमार हो गई है। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था। एक महीने तक अस्पताल में इलाज किया गया। साथ ही उनकी हालत इतनी चिंतित हो गई कि आई,सी,यू में प्रवेश करना पड़ा। जीवित रहने की आशा बहुत कम थी। उस समय, उन्हें मेरे ख़ुत्बा को याद आया जो तहरीक जदीद की बरकत के बारे में था। अत: सभी परिवार के सदस्यों ने एक साथ मिल कर फैसला किया कि हम सब ने इस रमज़ान में मिल कर तहरीक जदीद का सौ प्रतिशत चन्दा अदा करना है और सौ प्रतिशत अदा कर दिया। और मुझे भी उन्होंने दुआ के लिए लिखा। कहते हैं कि अल्लाह तआला के फज़्ल से और दुआओं तथा कुरबानी के कारण मेरे ससुर की हालत बेहतर होने लगी और होती चली गई और कुछ दिनों बाद डॉक्टर ने उन्हें घर लौटने की अनुमति दी। घर पहुंचकर, जब पड़ोसियों ने पाया कि वह पूरी तरह से ठीक हो गई हैं, तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि मौत के मुंह तक पहुंच गया आदमी वापस कैसे आ गया।

यू.के से बर्मिंघम सेंट्रल जमाअत के सदर लिखते हैं कि हम तहरकी जदीद के लक्ष्य से 15 सौ पाऊंड पीछे थी और उस समय के अंत में क्लोजिंग में कुछ घंटे थे। विभिन्न लोगों को तहरीक की गई तो एक दोस्त जो पहले चौबीस सौ पाऊंड अदा कर चुके थे उन्होंने कहा कि वह 1500 सौ पाऊंड अदा कर देंगे। उस समय यह दोस्त देश से बाहर थे उन्होंने ऑन लाइन अदा किया। कहते हैं जिस दनि उन्होंने 1500 पाऊंड चन्दा अदा किया उस के अगले दिन उन्हें कर विभाग से 6,000 पाउंड वापस मिल गए। अल्लाह तआला ने उन्हें शीघ्र चार गुना बढ़ा कर दिया।

गरीबों की कुरबानियां कैसी हैं और अल्लाह तआला कैसे अद्भुत व्यवहार करता है इस बारे में बुरुंडी के मुअल्लिम साहिब लिखते हैं कि पिछले साल हम ने एक नई जमाअत कहांगा का दौरा किया और वहाँ एक नौ मुबाईन दोस्त मसूदी साहिब को चंदे के महत्व के बारे में बताया और उन्हें तहरीक की। मसूदी साहिब कहने लगे मेरे पास इस समय तो कुछ भी नहीं है, लेकिन हमारे घर में एक फल देने वाला पेड़ है। मैं पेड़ के फल बेच कर चन्दा अदा कर दूंगा वे कुरबानियां जो पहले ज़माना में नज़र आती थीं अब भी उनके नमूने दिखाई देते हैं। वह कहते हैं, अत: उन्होंने एक दो दिन के भीतर ही, उसका फल एक हज़ार बुरुंडी फ्रैंक में बेचा और सारा पैसा चन्दा में अदा कर दिया। बाद में उन्होंने बताया कि मैंने जो फल बेचकर चंदा अदा किया था इस वजह से बहुत ज्यादा बरकत पड़ी है और अब इस पेड़ को पहले की तुलना में कई गुना अधिक फल लगा है जो चालीस से पैंतालीस हज़ार बुरुंडी फ्रैंक में बिक्री हुआ।

कांगो ब्राज़वील के मुअल्लिम साहिब लिखते हैं कि एक दोस्त मावली साहिब का बच्चा लंबे समय से बीमार था। जब उन के पास चन्दा की तहरीक की गई तो उन्होंने अदा कर और साथ ही दुआ की कि है अल्लाह तआला इस चन्दा की बरकत से मेरे बच्चे को ठीक करे दे। यह दोस्त वर्णन करते हैं कि कुछ दिनों बाद मेरे बच्चे का स्वास्थ्य बहाल हो गया और मुझे आश्चर्य हुआ कि हमारा अल्लाह

तआला दुआ स्वीकार करता है और हमारी तुच्छ कुरबानी भी स्वीकार करता है।

सैक्रेटरी तहरीक जदीद लज्ना कैनेडा लिखते हैं कि एक बहन ने कहा कि उसके पति ने तहरीक जदीद में एक हज़ार डॉलर का वादा किया था, लेकिन लंबे समय से बेरोज़गार थे। इस लिए अदा नहीं कर सके। साल की समाप्ति में एक सप्ताह बचा, सैक्रेटरी माल उन के घर चन्दा लेने आए। उनके पति अंदर गए और बेगम से कहा कि मेरे पास तो अभी कुछ भी नहीं है। अब क्या करें? इस पर महिला ने कहा कि खाली हाथ उन्हें जाने नहीं दे सकते हैं। उसके पास एक हज़ार डॉलर बचत थी। उस से चन्दा अदा कर दिया और कहती हैं कि चन्दा की बरकत से, उसके पति को उसी सप्ताह के भीतर सात हज़ार मासिक नौकरी मिल गई।

आइवरी कोस्ट के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि सैन पेड्रो में एक बच्चा है जो केवल 14 वर्ष का है। इस बच्चे के पिता ने बताया कि रविवार को मैंने अपने बेटे को एक घरेलू काम के लिए कहा तो उसने जवाब दिया कि मैं अत्फालुल अहमदिया की आमला में सैक्रटरी माल के रूप में चंदा एकत्रित करता हूँ और मैंने ख़ुद अभी तक चंदा अदा नहीं किया। क्योंकि बाकी दिन स्कूल जाना होता है, इसलिए आज मैं किसी के खेत में काम करना चाहता हूं। मैं कुछ श्रम करूंगा ताकि मैं पैसे अदा कर सकूं। इस पर, पिता ने बेटे से कहा कि मैं तुम को पैसे अदा करने के लिए देता हूं। उनके बेटे ने जवाब दिया कि मुरब्बी साहिब ने कहा था कि बच्चों को अपनी जेब खर्च से बचत कर के अपना पैसा देना चाहिए अत: इस बार मैं आप का पैसा नहीं ले सकता क्योंकि मैं आज काम करना चाहता हूं ताकि पैसा कमा कर चन्दा अदा करूं। अत: उस ने काम किया और चन्दा की रक़म अदा की। तो यह सोच है बच्चों की दूर दराज़ रहने वालों में, नए शामिल होने वालों में जो अल्लाह तआला पैदा कर रहा है।

जर्मनी के सैक्रेटरी तहरीक जदीद कहते हैं कि एक औरत ने बताया कि मेरी मां पाकिस्तान में कलीसा भटियां में, स्कूल टीचर थीं और बहुत सारी वित्तीय कुरबानी करती थीं। प्राय: जब ईद आती तो बच्चों को नए कपड़े मिलते थे, लेकिन मेरी मां रमज़ान में शत प्रतिशत तहरीक जदीद का चन्दा अदा करतीं और दुआ की सूची में शामिल होने का प्रयास करतीं। अक्सर वह ऋण ले कर अदा करती और फिर बाद में उधार उतारने में लगी रहतीं। जब मस्जिद बिशारत स्पेन की तहरीक हुई तो उन्होंने अपनी बाली जो उनका इकलौता ज़ेवर था प्रस्तुत कर दिया जिसकी वजह से ससुराल में भी काफी बातें सुननी पड़ी। यह महिला कहती है कि उस समय मेरा बचपन था और मुझे विश्वास था कि इस तरह ख़ुद को तंगी में डाल कर कुरबानी करना ठीक नहीं है और यही सिद्धांत मेरे दिमाग़ में बैठ चुका था। पिछले साल, जब तहरीक जदीद के हवाले से जब तहरीक शुरू हुई। तो मैंने सोचा कि मैं अपनी मां की तरह नहीं हूं जिसने इस तरह से सब कुछ दिया है, इसलिए मैं बुद्धिमानी का प्रदर्शन करते हुए, एक तीस या पच्चीस यूरो का वादा किया। यह कहती हैं कि अल्लाह तआला ने ऐसा किया है कि थोड़े समय के बाद, मेरे गर्दन में दो गिलटियां निकल आईं, जिस से मुझे बहुत डर आया। डॉक्टर ने ऑपरेशन का प्रस्ताव दिया। उस समय मुझे अपने गहने या कपड़े पसंद नहीं आए। एक दिन मेरा एक ख़ुत्बा सुना जिस में मैंने महिलाओं की वित्तीय कुरबानी का ज़िक्र किया था तो कहती हैं समय के ख़लीफा का ख़ुत्बा सुन कर मेरे दिल में ख्याल आया और फिर अपना सारा ज़ेवर जो है वह तहरीक जदीद में अदा कर दिया, मैंने इस की क़ीमत लगवाई और अदा कर दिया। इस के बाद फिर दोबारा डॉक्टर के पास गया, डॉक्टर ने कहा कि ये गिलटियां हानि रहित हैं। यह कहती हैं अल्लाह तआला ने मुझे इस भय से बचाया। मैं समझ गया कि ख़ुदा तआला ने मुझे मेरे गर्व वाले व्यवहार के लिए दंडित किया था, इसलिए अब मेरे दिल में ऐसी बुराई नहीं है। मेरे पति को एक होटल में काम करने के कारण चन्दा देने पर पाबन्दी थी। मैंने दुआ की कि अल्लाह तआला मेरी पति को अच्छा रोज़गार दे, तो मैं 500 यूरो तहरीक जदीद में अद कर दूंगी। अत: अल्लाह तआला चमत्कारी रूप में मेरे पति को एक अच्छा काम दिलाया और अब हम दोनों पति पत्नी चन्दा देते हैं।

लाहौर की सैक्रेटरी तहरीक जदीद लज्ना लिखती हैं कि पिछले दो वर्षों से वापदा टाऊन की एक डेढ़ साल से सांस की तकलीफ में थीं। केंद्रीय प्रतिनिधि की यात्रा के दौरान, उन्होंने अपने तहरीक के चन्दा में 50,000 रुपए अधिक बढ़ा दिया। अल्लाह तआला ने उन पर बड़ा फज़्ल किया और बीमारी जो बावजूद इलाज के बार-बार हमला करती थी यह स्थिति पूरी तरह से बदल गई और अब साल के अंत में पूरी तरह स्वास्थ्य हैं।

अमीर साहिब गाम्बिया लिखते हैं कि पूर्वी ज़िला के गांव के एक दोस्त नियमित रूप से तहरीक जदीद का चन्दा दिया करते थे। अब हाल ही में उन के गांव में जानवरों की एक बीमारी फूट पड़ी, जिसके कारण गांव वालों के जानवर मरने लगे और लगभग सभी लोग अपने पशुओं से हाथ धो बैठे। सांबा साहिब का एक जानवर भी नहीं मरा गांव वालों ने पूछा कि एस का क्या कारण है? उन्होंने कहा कि मैं हर साल, अपने जानवरों में से एक को बेच क चन्दा देता हूं, और अल्लाह तआला ने उन जानवरों को बीमारी से बचा लिया है। दूसरी ओर अन्य सात ग्रामीणों ने जो अहमदी थे तहरीक जदीद का चन्दा अदा कर दिया। उन्होंने देखा कि उनके जानवरों के स्वास्थ्य में भी सुधार हुआ है, और पशुओं के चिकित्सक ने कहा कि इस बीमारी से कोई भी प्राणी जीवित नहीं रहेगा। कुछ दिनों के बाद, जब पशु चिकित्सक फिर से आया, तो उसने जानवरों का निरीक्षण किया और कहा, तुम लोगों ने क्या इलाज का तरीका किया है कि जिस से ये जानवर ठीक हो गए हैं? तो इस पर वह कहते हैं कि वहां गांव की एक बूढ़ी औरत चन्दा की रसी ले आई और यह इसका इलाज करने का हमारा तरीका था। इस पर डॉक्टर बहुत हैरान हुआ और कहा कि वह जमाअत अहमदिया के बारे में तहकीक़ करेगा अत: इस को बड़ी संख्या में लिट्रेचर दिया गया।

तो देखें कि इन दूरदराज़ के इलाकों के लोगों में विश्वास और ईमान कैसे बढ़ रहा है और इनका यही विश्वास और अल्लाह तआला पर भरोसा और उस के वादों पर विश्वास है। जो दूसरों को भी इस्लाम की सच्चाई के बारे में सोचने के लिए मजबूर कर रहा है। अल्लाह तआला उन सभी के विश्वास और ईमान को बढ़ाता चला जाए और हमेशा अपने प्यार की नज़र उन पर डाले।

अल्लाह तआला की कृपा की से इन घटनाओं का वर्णन करने के बाद, अब जैसा कि नवंबर की शुरुआत में तहरीक जदीद के नए साल की घोषणा की जाती है , तहरीक जदीद की घोषणा करते हुए पिछले साल के कुछ विवरण प्रस्तुत करता हूं।

इस साल यह तहरीक जदीद का 85 वां साल इस एक नवंबर से शुरू हो चुका है और 84 वां साल जो अल्लाह तआला में जो अल्लाह तआला के फज़्ल हुए उस की रिपोर्ट यह है जो आने वाली रिपोर्टों के आधार पर है इस के अनुसार 12.79 लाख से अधिक पाऊंड अल्लाह तआला ने श्रद्धावानों को कुरबानी करने की तौफीक़ प्रदान की। अर्थात एक करोड़ सत्ताईस लाख तिरानवे हज़ार पाऊंड, पिछले साल की तुलना में अल्लाह तआला के फज़्ल से दो लाख बारह हज़ार पाऊंड से अधिक है बावजूद दुनिया की अवस्था ठीक नहीं है और बहुत सारे देशों की करंसी डी वेल्यू होने के अल्लाह तआला ने फिर तौफीक़ प्रदान की।

कुल वसूली के मुताबिक, पाकिस्तान का पहला नंबर है, जिसके बाद जर्मनी नंबर एक है, ब्रिटेन नंबर दो, संयुक्त राज्य अमेरिका नंबर तीन, कनाडा नंबर चार, पांच नम्बर पर भारत है, छठे नम्बर पर ऑस्ट्रेलिया है, सातवें पर मध्य एशिया

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

की एक जमाअत है, इंडोनेशिया आठवें स्थान पर आठवां है, फिर नौवें स्थान पर घाना है, और फिर मध्य पूर्व का ही एक देश है।

प्रति व्यक्ति अदा करने के मामले में स्विट्जरलैंड नंबर पर है, संयुक्त राज्य अमेरिका नम्बर दो पर फिर यूके फिर सिंगापुर, बेल्जियम, जर्मनी, कनाडा और फिनलैंड।

अफ्रीका के देशों में वसूली की दृष्टि से घाना, नाइजीरिया, गैंबिया, तंज़ानिया महत्वपूर्ण जमाअतें हैं।

शामिल होने वालों की कुल संख्या की तरफ भी अल्लाह तआला के फज़्ल से ध्यान दिया जा रहा है। इस वर्ष तहरीक 17 लाख 17 हज़ार लोगों शामिल हुए हैं और शामिल होने वालों की संख्या में 1 लाख 70 हज़ार की वृद्धि हुई हैं। और उनमें अधिक वृद्धि जो अफ्रीकी देशों में हुई है वह नाइजर, जाम्बिया, बेनिन, बोर्कीना फासो, घाना, नाइजीरिया, कैमरून, कांगो कंसाशा, लाइबेरिया, मॉरीशस और आइवरी कोस्ट में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

बड़ी जमाअतों में इंडोनेशिया, जर्मनी, भारत और पाकिस्तान, कनाडा और अमेरिका और नॉर्वे और मलेशिया शामिल हैं।

दफतर अव्वल का खाते भी अल्लाह तआला की कृपा से जारी हैं, जो 5,927 हैं।

वित्तीय कुरबानी में पाकिस्तान के तीन प्रमुख ज़िलों की रिपोर्ट के अनुसार नम्बर एक पर लाहौर है, नंबर दो पर रब्वा है, नम्बर तीन पर कराची है। रब्वा को ज़िलों की सूची में शामिल किया गया यद्यपि वह ज़िला नहीं एक शहर है। और अधिक कुरबानी करने वाले ज़िला हैं उनमें सियालकोट, सरगोधा, गुजरात, गुजरांवाला, उमरकोट, हैदराबाद, नारोवाल, मीरपुर खास, टोबा टेकसिंह और मीरपुर आज़ाद कश्मीर हैं।

वसूली के मामले में जमाअतें इस्लामाबाद इमारत, डिफेंस लाहौर इमारत, टाउनशिप लाहौर इमारत, अज़ीज़ आबाद कराची, पेशावर इमारत, गुलशन इकबाल कराची इमारत, करीमनगर फैसलाबाद, क्वेटा, नवाबशाह, बहावलपुर और ओकाड़ा।

जर्मनी की पहली दस टीमें हैं। नोयस (Neus), रोयडर मार्क (Roedermark), पुने बर्ग (Pinneberg), मेहदी आबाद (Mehdi-Abad) , कील (Kiel), फलउरज़ हायम (Floersheim), कोबलनज़ (Koblenz), वाइन विहार (Weingarten), कोलोन (Koeln), लिंबर्ग।

और स्थानीय इमारतें उनकी दस हैं। हैम्बर्ग (Hamburg), फ्रैंकफर्ट (Frankfurt), मउरफीलडन (Moerfelden), ग्रोस गीराउ (Gross Gerau), डेटसन बाख़ (Ditzenbach), वीज़बादन (Wiesbaden), मन हायम (Mannheim), रेड शटड (Reidstadt), ओफेन बाख़ (Offenbach) और डैम शेटेड (Darmstadt)।

कुल अदायगी के अनुसार ब्रिटेन के पहले पांच क्षेत्र हैं लंदन बी (London B), लंदन ए (London A), मिड नीदरलैण्ड (Midlands), पूर्वोत्तर (Nother East) और साऊथ (South)।

कुल अदायगी के अनुसार ब्रिटेन की पहली दस बड़ी जमाअतें मस्जिद फज़्ल (Fazal Mosque) नंबर एक पर फिर वोस्टर पार्क (Worcester Park) फिर बर्मिंघम साऊथ (Birmingham South), न्यू मालडिं (New Malden), ब्रैड फोर्ड नार्थ (Bradford North), इस्लामाबाद (इस्लामाबाद), बर्मिंघम पश्चिम, ग्लास्गो, गिलिंगहम, स्कन्थोरपे।

और जो पाँच छोटी जमाअतें हैं स्पिन वैली (Spen Valley), सवानसी (Swansea), नार्थ वेल्स (North Wales), साऊथ क्षेत्र (Southfields), एडिनबर्ग (Edinburgh)।

अदायगी के मामले में पहले पांच क्षेत्र दक्षिण पश्चिम, मिडलैंड्स, फिर इस्लामाबाद फिर उत्तर पूर्व और स्कॉटलैंड हैं।

कुल अदायगी के आधार पर अमेरिका की जमाअतें हैं नंबर एक ओश कोश (Oshkosh), फिर सिलिकॉन वैली (Silicon Valley) फिर सिएटल (Seattle) फिर डेट्रायट (Detroit), सिल्वर स्प्रिंग (Silver Spring), यॉर्क (York), सेंट्रल वर्जीनिया (सेंट्रल वर्जीनिया), जॉर्जिया (अटलांटा), लॉस एंजिल्स ईस्ट, सेंट्रल जर्सी, लॉरेल।

वसूली के मामले में कनाडा की स्थानीय इमारतें हैं। बरामटन (Brampton), वान (Vaughan), पीस वेलेज (Peace Village), कैलगरी (Calgary) , वैंकूवर (Vancouver), वेस्टन (Westn) और मिसी सागा (Mississauga)।

वसूली के मामले में कनाडा के पांच उल्लेखनीय जमाअत हैं एडमॉन्टन वेस्ट (Edmonton West) नम्बर एक पर फिर डरहम (Durham), हैमिल्टन साऊथ (Hamilton South), ब्रैड फोर्ड (Bradford) और सस्काटोन नार्थ (Saskatoon North)।

कुरबानी के आधार पर भारत की दस बड़ी जमाअतें हैं कादियान पंजाब, हैदराबाद तलैंगाना (Telangana), पत्ता पीरियम (Pathapiriyam) केरल, चेन्नई तमिलनाडु, कालीकट केरल, बैंगलोरो कर्नाटक, कोलकाता बंगाल, पेंगाडी केरल, केनानूर टाउन केरल, यादगीर कर्नाटक।

भारत के प्रांत कुरबानी के लिहाज़ से पहला नम्बर है केरल, फिर कर्नाटक फिर तमिलनाडु, तेलंगाना, जम्मू-कश्मीर फिर उड़ीसा फिर पंजाब फिर बंगाल फिर दिल्ली और महाराष्ट्र।

कुल वसूली के अनुसार ऑस्ट्रेलिया की दस जमाअतें हैं। कासल हिल (Castle Hill), मलबरन बैरोक (Melbourne Berwick), ACT कैनबरा (Canberra), पीनरथ (Penrith), मलबरन लांग वॉरेन (Melbourne Long Varren), मारज़डिं पार्क (Marsden Park), एडीलेड साउथ, ब्रिस्बेन लोगान, ब्रिस्बेन, प्लम्प्टन।

और प्रति व्यक्ति अदायगी के आधार पर तसमानिया (Tasmania), ACT कैनबरा (Canberra), कैसल हिल (Castle Hill), डार्विन (Darwin), मारज़डिं पार्क (Marsden Park), मलबर्न बैरोक (Melbourne Berwick), सिडनी सिटी (Sydney City), पर्थ, कैंप बेल टाउन (कैम्बेलटाउन) और परमट्टा (पररामट्टा)।

अल्लाह तआला इन सब कुरबानी करने वालों के माल तथा नफूस में बहुत अधिक बरकत प्रदान करे। लोगों को विचार होगा कि सफर के बाद आपने हालात वर्णन करूंगा तो अगले ख़ुत्बा में इन्शा अल्लाह तआला।

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-1)

☆ सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का जर्मनी का मुबारक सफर , पारिवारिक मुलाकातें, आमीन की तकरीब, जमाअत के लोगों की मुलाकात के बाद की भावनाएं।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

1 सितम्बर 2018 (दिनांक शनिवार)

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ जर्मनी सफर पर रवाना होने के लिए कार्यक्रम के अनुसार सुबह साढ़े नौ बजे अपने निवास से बाहर आए। हुज़ूर अनवर को अलविदा कहने के लिए सुबह से ही जमाअत के दोस्तों पुरूष, महिलाओं मस्जिद फज़ल लंदन के बाहरी परिसर में जमा थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ दया करते हुए कुछ देर के लिए दोस्तों के बीच रौनक अफरोज़ रहे। प्रत्येक व्यक्ति अपने प्यारे आक़ा के शरफ़ ज़ियारत से लाभान्वित हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ ऊंचा कर के सब को अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्ला व बरकातुहो कहा और इस के बाद इज्तिमाई दुआ करवाई। इस के बाद चार गाड़ियों पर आधारित एक काफिला, ब्रिटेन के तटीय शहर डोवर की तरफ रवाना हुआ।

डोवर ब्रिटेन का एक प्रसिद्ध बंदरगाह है। लंदन और इसके आसपास के क्षेत्रों और शहरों में बसे लोग यूरोप का सफर Ferries के माध्यम से इसी बंदरगाह करते हैं। डोवर शहर से ग्यारह मील पहले Folkestone के क्षेत्र में वह प्रसिद्ध Channel Tunnel जो ब्रिटेन और फ्रांस के तटीय क्षेत्रों को आपस में जोड़ती है। इस Tunnel (सुरंग) द्वारा कारों और अन्य बड़ी गाड़ियों को यात्रियों के साथ फ्रांस के तटीय शहर कालाईस तक पहुंचती हैं। आज का सफर भी इसी चैनल टनल के माध्यम से ही होना था।

लंदन से आदरणीय रफीक़ अहमद हयात साहिब अमीर जमाअत अहमदिया यू. के, आदरणीय अताउल मुजीब राशिद साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज यू. के, आदरणीय मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब मुख्य निरीक्षक, आदरणीय डॉक्टर शब्बीर अहमद भट्टी साहिब आदरणीय मेजर महमूद अहमद साहिब अफसर सुरक्षा विशेष, आदरणीय इमरान ज़फर साहिब कंडक्टर मुहतमिम उमूमी ख़ुद्दामुल अहमिदया यू.के अपनी ख़ुद्दाम सुरक्षा टीम के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ को अलविदा कहने के लिए चैनल सुरंग तक काफिले के साथ आए थे।

लगभग एक घंटा पचपन मिनट सफर के बाद ग्यारह बज कर पच्चीस मिनट पर चैनल सुरंग का आगमन हुआ। लंदन से साथ आने वाले दोस्तों ने अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहा।

बाद में आव्रजन और अन्य सफर के मामलों के समापन के बाद कुछ समय के लिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ एक विशेष लाउंज में पधारे। लगभग बारह बजे क़ाफिला की गाड़ियां ट्रेन पर बोर्ड की गईं। ट्रेन 12 बज कर सात मिनट पर 140 किलोमीटर प्रति घंटा की गति से फ्रांस के तटीय शहर कालाईस लिए रवाना हुई। इस सुरंग की कुल लंबाई 31 मील है और इस में से 24 मील का हिस्सा समुद्र तल के नीचे है।इस सुरंग गहरे सबसे भाग समुद्र तल से 75 मीटर यानी 250 फुट नीचे है। अब तक, यह सुरंग पानी नीचे से दुनिया की सबसे बड़ी सुरंग है।

लगभग आधे घंटे की सफर के बाद फ्रांस के स्थानीय समय के अनुसार एक बज कर चालीस मिनट पर ट्रेन फ्रांस के शहर कालाईस पहुंची। (फ्रांस का समय ब्रिटेन से एक घंटा आगे है)

ट्रेन रुकने के क़रीब पांच मिनट बाद गाड़ियां ट्रेन से बाहर आईं और मोटर वे पर सफर शुरू हुआ। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार यहाँ से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक पेट्रोल पंप के पार्किंग क्षेत्र में जमाअत फ्रांस और जमाअत जर्मनी से आए प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ का स्वागत करना था। फ्रांस से आदरणीय अशफाक़ रब्बानी साहिब अमीर जमाअत फ्रांस, आदरणीय मुहम्मद असलम दोबरी साहिब नायब अमीर जमाअत फ्रांस, आदरणीय फहीम अहमद नेशनल जनरल राष्ट्रीय सैक्रेटरी, आदरणीय मंसूर अहमद ज़फर साहिब राष्ट्रीय सचिव प्रशिक्षण, मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह साहिब सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमिदया फ्रांस और हारून रशीद साहिब मुहतमिम उमूमी ख़ुद्दामुल अहमिदया फ्रांस अपने प्यारे आक़ा का स्वागत करने के लिए मौजूद थे। जबकि जर्मनी से आदरणीय अब्दुल्लाह वागस हायवज़र साहिब अमीर जमाअत जर्मनी, आदरणीय सदाक़त अहमद साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज जर्मनी, आदरणीय मुहम्मद इलियास मजूकह साहिब राष्ट्रीय सैक्रेटरी व अफसर जलसा सालाना जर्मनी, आदरणीय हसनात अहमद साहिब सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमिदया जर्मनी, अहमद कमाल साहिब नायब सर ख़ुद्दामुल अहमिदया जर्मनी, आदरणीय डॉक्टर अतहर ज़ुबैर साहिब आदरणीय अब्दुल्लाह सुपरा साहिब आदरणीय जरी अल्लाह साहिब (मुबल्लिग़ सिलसिला) नायब सैक्रेटरी और आदरणीय इन्चार्ज साहिब सुरक्षा टीम अपने ख़ुद्दाम के साथ अपने प्यारे आक़ा का स्वागत करने के लिए मौजूद थे। यहां पहुंचने के बाद, सफर बिना रुके चलता रहा।

कार्यक्रम के अनुसार कुछ किलोमीटर का सफर तय करने के बाद हाईवे पर ही एक होटल HOLIDAY INN में नमाज़ ज़ुहर व अस्र अदा करने और दोपहर के भोजन का इंतज़ाम किया गया था। जमाअत फ्रांस ने इस का प्रबंध किया था। दोपहर दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ यहाँ तशरीफ़ लाए। जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ कार से बाहर आए तो आदरणीय अमीर साहिब फ्रांस, आदरणीय नायब अमीर साहिब फ्रांस, आदरणीय अमीर साहिब जर्मनी, मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब जर्मनी और जर्मनी के सैक्रेटरी, अपने प्रिय आक़ा से हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

नमाज़ ज़ुहर तथा असर अदा करने के लिए रेस्तरां के एक अलग हॉल में इन्तिज़ाम किया गया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों के अदा करने और दोपहर के भोजन के बाद यहां से आगे फरनकफरट लिए प्रस्थान का कार्यक्रम था। प्रस्थान से पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए कुछ देर के लिए अमीर साहिब फ्रांस से विभिन्न मामलों के संदर्भ में बात फ़रमाई। बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने सामूहिक दुआ करवाई और तीन बज कर दस मिनट पर फरनकफरट जर्मनी के लिए प्रस्थान किया और कालाईस से 55 किलोमीटर का सफर तय करने के बाद फ्रांस के सीमा पार कर के बेल्जियम में प्रवेश किया और रास्ते में आख़न नामक स्थान पर क़रीब साढ़े छह बजे बेल्जियम के सीमा पार कर के जर्मनी में प्रवेश किया और कुछ सफर के बाद यहां एक रेस्तरां के पार्किंग क्षेत्र में कुछ देर के लिए रुके। बाद में प्रति फरनकफरट का सफर जारी रहा और इस तरह कालाईस से फरनकफरट तक लगभग 600 किलोमीटर का सफर तय करने के बाद रात नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ का जमाअत जर्मनी केंद्र बैयतुस्सुबूह फरनकफरट में पधारे।

बैयतुस्सुबूह में तशरीफ़ लाने के बाद जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ कार से बाहर आए तो फरनकफरट शहर और उसके आसपास

की जमाअत और जर्मनी के कुछ विभिन्न शहरों से आए जमाअत के दोस्तों पुरुषों और महिलाओं और बच्चों बच्चियों ने अपने प्यारे आक़ा का बड़े वालहाना शैली में स्वागत किया। भक्ति और प्रेम से हर तरफ हाथ हिला रहे थे और अहलन व सहलन व मरहबा के स्वर बुलंद हो रहे थे। एक तरफ दोस्त बड़े जोशीने तरीके में अपने आक़ा का स्वागत कह रहे थे तो दूसरी ओर बच्चे और बच्चियां विभिन्न समूहों के रूप में स्वागत गीत और दुआ की नज़्में पढ़ रही थीं। महिलाएं शरफ़ ज़ियारत से लाभान्वित हो रही थीं। आदरणीय इदरीस अहमद साहिब स्थानीय अमीर फरनकफरट, आदरणीय हैदर अली ज़फर साहिब नायब अमीर जर्मनी, आदरणीय इमतियाज़ शाहीन साहिब मुबल्लिग़ फरनकफरट और आदरणीय मुबारक अहमद साहिब जावेद सैक्रेटरी जमाअत फरनकफरट ने हुज़ूर अनवर का स्वागत कहते हुए हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। अपने प्यारे आक़ा का स्वागत करने वाले ये दोस्तों फरनकफरट शहर के विभिन्न भागों के अलावा GIESSEN BAD VILBEL LIMBURG BAD HOMBURG HANAU MORFELDEN FULDA GELNHAUSEN गरोसगीराउ NIEDERNHAUSEN कैसल KOLN वीज़बादन OBERRUSSEL म्यूनिख RUSSELSHEIM कोबलनज़ MAINTALL हैमबर्रग DIETZENBACH आफन उद्यान RAUNHEIM के शहरों और जमाअतों से आए थे।

अपने आक़ा के स्वागत के लिए कुछ दोस्त और परिवार बहुत लंबे सफर तय करके आए थे। कोबलनज़ से आने वाले 130 कि.मी, FULDA से आने वाले 135 कि.मी, कोलोन से आने वाले 170 कि.मी, कैसल शहर से आने वाले 250 कि.मी, म्यूनिख से आने वाले दोस्त 450 किलोमीटर और हैम्बर्ग से आने वाले 550 किलोमीटर का लंबा सफर तय करके पहुंचे थे।

जलसा सालाना जर्मनी में भागीदारी के लिए विदेशों से मेहमानों और प्रतिनिधियों के आगमन का सिलसिला जारी है। अब तक ताज़किस्तान, मॉरीशस, घाना, पाकिस्तान, कज़ाख़िस्तान, उज्बेकिस्तान, रशिया, नाइजीरिया, इंडोनेशिया, सिएरा लियोन और स्वीज़रलैंड से आने वाले प्रतिनिधियों और दोस्त भी स्वागत करने वालों में शामिल थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बढ़ा कर सबको अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह कहा और दोनों तरफ खड़े अपने आशिकों के बीच से गुज़रते हुए अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए। अपने प्यारे आक़ा का स्वागत करने वाले पुरुष औरतें और बच्चे बच्चियों की संख्या दो हज़ार तीन सौ सत्तर के लगभग थी।

9 बज कर 20 मिनट पर सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय भाग में पधारे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के स्वागत के लिए जर्मनी के विभिन्न जमाअत से जो दोस्तों पुरुष तथा औरतें पहुँचे थे इन सभी ने अपने प्यारे आक़ा के अनुसरण में नमाज़ मग़रिब तथा इशा अदा करने की सआदत पाई। इन में एक बड़ी संख्या ऐसे भाग्यशाली दोस्तों और युवाओं की था जो पिछले एक साल के दौरान पाकिस्तान से किसी माध्यम से यहां पहुंचे थे उनके जीवन में अपने प्यारे आक़ा के अनुसरण में यह पहली नमाज़ थी, ये सभी लोग अपनी इस सआदत प्राप्त पर बेहद खुश थे और उनके बहुत मुबारक और बरकतों वाले क्षणों से लाभान्वित हो रहे थे जो जीवन में पहली बार आए थे और उनके प्यासी रूहों को तृप्त कर रहे थे।

अल्लाह तआला यह बरकतें और रहमतें हम सभी के लिए मुबारक करे और हमारी नई नस्लों और औलादों को भी इनामों से नवाज़े।

2 सितम्बर 2018 (दिन सोमवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बज कर 40 मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर विभिन्न दफतरी मामलों को करने में व्यस्त रहे।

पारिवारिक मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार बारह बजे हुज़ूर अनवर अपने कार्यालय आए और परिवारों की मुलाकात शुरू हुई। आज सुबह इस सत्र में 40 परिवारों के 125 लोगों को अपने प्यारे आक़ा से मिलने का सौभाग्य मिला। मुलाकात करने वाले ये परिवार जर्मनी की निम्नलिखित विभिन्न जमाअतों से आए थे:

गेबन, कोबलनज़, रोडर मार्क, Ulm, पेड्रो एयरबोर्न, एच वारमज़, वीरसन, काईसरल आयोटन, रेटनजन, कालसर्वए, वीज़ बादन, डार्मसटड, आख़न, फरनकनथल, हीटर शाईम, डाईज़न बाख़, मारबर्ग, हेमबर्ग, बेड सिडन, ओस्ना ब्रुक, कैमपटन, कॉलिन, बर जसन कलीड बाख़, नीडा, आख़न बाग़, ईलज़े।

कुछ परिवार और दोस्त बड़े लंबे सफर तय करके मुलाकात के लिए पहुंचे थे। कोबलनज़ और काईसरल आयोटन से आने वाले 130 किलोमीटर का सफर तय करके आए थे। कॉलिन और बर जसन से आने वाले परिवार 200 किलोमीटर और पेड्रो एयरबोर्न से आने वाले परिवार 250 किलोमीटर, आख़न से आने वाले 265 किलोमीटर, ulm से आने वाले 300 किलोमीटर का सफर तय कर के पहुँचे थे। जबकि औस्ना ब्रुक से आने वाले परिवार 325 किलोमीटर और कैमपटन शहर की जमाअत से आने वाले परिवार 400 किलोमीटर और हमबर्ग से आने वाले 550 किलोमीटर का लंबा सफर तय करके पहुंचे थे।

जर्मनी के इन परिवारों के अलावा पाकिस्तान और केन्या से आने वाले दोस्तों ने भी अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात का श्रेय पाया। इन सभी परिवारों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किया और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान किया। मुलाकातों का यह कार्यक्रम दोपहर दो बजे तक जारी रहा।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर व अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए। पिछले पहर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्ररेहिल अज़ीज़ विभिन्न कार्यालय के मामलों में व्यस्त रहे।

पारिवारिक मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार छह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय आए और परिवारों की मुलाकात शुरू हुई। इस सत्र सत्र में आज, 50 परिवारों के 185 लोगों ने मुलाकात का सौभाग्य पाया। मुलाकात करने वाले प्रत्येक परिवार ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान किए।

आज शाम के इस सत्र में मुलाकात करने वाले ये परिवार जर्मनी के विभिन्न 40 जमाअतों और शहरों से आए थे। जिन में से कुछ परिवार और बुजुर्ग लंबा सफर कर के पहुंचे थे। कॉलिन से आने वाले परिवार 200 किलोमीटर, बोचम से आने वाले परिवार 250 किलोमीटर और ओलम डोनाओ से आने वाले 300 किलोमीटर का सफर तय करके पहुंचे थे। जबकि हानोवर से आने वाले 350, म्यूनिख़ से आने वाले परिवार 500 किलोमीटर और जमाअत हमबर्ग से आने वाले परिवार 550 किलोमीटर का लंबा सफर तय करके अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात के लिए पहुंचे थे। आज, ऐसे कई परिवार थे जो हुज़ूर अनवर के साथ अपने जीवन में पहली बार मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त कर रहे थे कर रहे थे।

हुज़ूर से मुलाकात और जमाअत के लोगों की प्रतिक्रियाएं

*एक दोस्त फहीम रहमान साहिब कहने लगे कि हमारे जीवन में हुज़ूर अनवर से यह पहली मुलाकात थी। शब्दों में मेरी भावनाओं को व्यक्त करना मेरे लिए बहुत मुश्किल है। मैं इस की ताकत नहीं रखता हुज़ूर तो नूर ही नूर थे। हमारे सारे जीवन का सबसे अच्छी ख़ुश किस्मती यह है कि हम हुज़ूर से मिले हैं। उनकी पत्नी ने कहा कि आज की मुलाकात हमारे जीवन का पहला मौका था, हम तो बरकतें समेट कर जा रहे हैं ।

* एक दोस्त, कामिल अहमद अवान ने कहा कि हुज़ूर अनवर ने हमें बहुत प्यार किया। अक्सर हमारे परिवार के बारे में पूछा। सभी को बहुत प्यार किया। ख़ासकर मेरे बेटे को बहुत प्यार किया और हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की अंगूठी इस के चेहरे पर रखी। जो समस्याओं हम लेकर आए थे, आज की

शेष 12 पृष्ठ पर

इस्लामी इतिहास की एक स्वर्णिम घटना

"क्या तुम समझते हो कि जिस ख़ुदा तआला ने मेरे बचपन में मेरी मदद फ़र्माई थी उस ख़ुदा तआला को अब मैं जवान हो कर छोड़ दूंगा। जाओ जो तुम्हारे जी में आता है कर लो। न्याय के मामले में तुम्हारी कोई बात सुनने को तैयार नहीं।" - अस्मा नज्जाशी शाहे हब्शा

जमाअत अहमदिया के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमदरज़ि. फ़रमाते हैं :-

"रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में जब दुश्मनी का ज़ोर बढ़ गया और दुश्मनों ने इस्लाम को अपनी पूरी ताकत और शक्ति से कुचलना चाहा तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा को बुलाकर कहा कि तुम लोग यहां से हिजरत कर जाओ। सहाबा ने पूछा। या रसूलल्लाह आप हमें हिजरत के लिए कहते हैं तो क्या आप भी हिजरत करेंगे। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया नहीं मैं उस समय तक इंतजार करूंगा। जब तक ख़ुदा तआला द्वारा मुझे हिजरत का स्पष्ट आदेश न मिल जाए लेकिन तुम पर जो अत्याचार हो रहे हैं। उन्हें देखते हुए मेरा दिल यही चाहता है कि तुम हिजरत कर जाओ । उन्होनें कहा हे रसूलल्लाह कौन सा देश है जहां हमें शांति प्राप्त होगी। आप ने पश्चिम की तरफ हाथ उठाकर कहा उधर एक देश है जिसका राजा आदिल और न्यायाधीश है। तुम अगर वहाँ चले जाओ तो तुम्हें शांति मिलती आ जाएगा। वह इशारा आपका ऐबे सीनिया की ओर था जिसे हब्शा कहते हैं। इसलिए आपके आदेश पर साहाबा की जमाअत उधर जाने के लिए तैयार हो गई। जो लोग हिजरत कर के गए। उन में हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब भी थे जो हज़रत अली के सगे भाई और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचेरे भाई थे। जब ये लोग मक्का से हबशा चले गए तो पहले तो कुफ़्फ़ार ने माना कि अच्छा हुआ मुसलमान मक्का से निकल गए और हमारी कोशिशें कामयाब हो गईं, लेकिन जब उन्होंने देखा कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके वफ़ा दार ख़ादिम हज़रत अबू बकर, हज़रत अली ,हज़रत उस्मान और कई और बड़े परिवारों के युवा संतुष्टि से मक्का में बैठे हैं और मक्का में प्रचार उसी पुराने उत्साह से जारी है तो उन्हें विचार आया कि मुसलमानों की एक जमाअत को मक्का से निकाल देना हमारी सफलता नहीं कहला सकता बल्कि यह हमारी हार का प्रतीक है। क्योंकि इस तरह इस्लाम के दो केंद्र स्थापित हो गए और मक्का से निकल कर प्रचार एक राष्ट्र की जगह दो राष्ट्रों यानी मक्का निवासियों और ईसाइयों में होनी शुरू हो गई है। इसके साथ ही जब उन्हें यह सूचना भी मिलनी शुरू हो गईं कि उन्हें शांति मिल गई है और न कोई उन्हें मारता है न पड़कता है और न किसी प्रकार का दुःख देता है बल्कि आराम से इबादतें और स्मरण करते और मेहनत कर अपने लिए रोजी उत्पादन करते हैं। तो उन्होंने आपस में सलाह की कि यह तो हम से बड़ी ग़लती हुई। कि हम ने सख्ती की और मुसलमान भाग गए। अगर वे अपने देश में ही रहते तो हम जब चाहते उन्हें मार सकते थे। मगर अब जो विदेश में चले गए हैं तो हमारे क़ब्जे से निकल गए हैं और बजाय मुसलमानों को कमज़ोरी पहुंचती उन्हें ऐसा ठिकाना उपलब्ध हो गया है कि अब वह हमारे ख़िलाफ बड़ी आसानी के साथ प्रचार करेंगे और हमारे पड़ोसी सरकार को हमारे ख़िलाफ उकसाएँगे। इसलिए इसके रोकथाम के लिए उन्होंने सलाह कर तय किया कि एक प्रतिनिधिमंडल हबशा जाए और इसके साथ विभिन्न प्रकार के उपहार भेजे जाएं जो राजा और उसके अमीरों और पादरी आदि के लिए हों। यह प्रतिनिधिमंडल बादशाह के सामने पेश हो और उसे कहे कि तुम हमारे पड़ोसी हो और तुम्हारे साथ हमारे बड़े अच्छे संबंध हैं। लेकिन अब हमारे देश के कुछ विद्रोही आप के देश में आकर शरणार्थी हो गए हैं उनके लोगों को अपने देश से निकाल दो और वापस मक्का में भिजवा दो और प्रस्ताव इसी अवसर पर राजा और उसके दरबारियों को उपहार दिए जाएँ ताकि उनके दिल में नर्मी हो और वह उन लोगों को वापिस कर दें।

इसलिए यह प्रतिनिधिमंडल हबशा गया। इस दल में हज़रत अम्र बिन अल्आलास जो तब तक मुसलमान नहीं थे शामिल थे। अम्र बिन अलआलास बड़े अच्छा बोलने वाले आदमी थे और आमतौर पर सरकार द्वारा जो प्रतिनियुक्ति जाते थे उनमें अम्र बिन अलआलास ज़रूर शामिल होते थे। इसलिए कुछ और जगहों पर भी मक्का वालों ने उन्हें भेजा है। उन्होंने हबशा के राजा नज्जाशी के सामने बड़ा उम्दा भाषण दिया और कहा राजा सलामत आप हमारे पड़ोसी हैं। यमन में आपकी सरकार है और यमन और हजाज़ पड़ोसी हैं इसलिए हमें एक दूसरे का ख्याल रखना चाहिए। लेकिन अब यह एक नया क्लेश पैदा हो गया है कि हमारे देश के कुछ भगोड़े आप के देश में आ गए हैं और आपने उन्हें शरण दे दी है। हम हैरान हैं कि आप हमारा पड़ोसी और संबंध वाले होकर हमारे दुश्मनों को शरण कैसे दे दी है। आप उन्हें मक्का में वापस भिजवा दें ताकि हमारे संबंध आपसे बदस्तूर अच्छे रहें और उनमें कोई विकार पैदा न हो। राजा ने कहा मैं उन को बुलवा कर और उनसे पूछ कर फैसला करूंगा। इसलिए मुसलमान मुहाजिरों को बुलाया गया और राजा ने उनसे पूछा कि यह क्या झगड़ा है सहाबा ने कहा हमारा कोई राजनीतिक विवाद नहीं केवल धार्मिक मतभेद है और इसकी वजह यह है कि हमारे शहर में ख़ुदा तआला का एक नबी आया जिसे हमने स्वीकार कर लिया। अब ये लोग हमें हमारे धर्म के अनुसार इबादत करने नहीं देते और धार्मिक मामलों में दखल देते हैं। हम चाहते हैं कि अपने रंग में ख़ुदा ताआला की इबादत करें और यह कहते हैं कि जिस तरह हम इबादत करते हैं इस तरह इबादत और चूंकि हम ऐसा नहीं करते इसलिए यह बुरा मनाते और हमें दुःख देते हैं। जिससे मजबूर होकर हमें अपना देश और अपने लोगों छोड़ने पड़े। राजा पर इसका अच्छा असर हुआ और उसने कहा विश्वासों में मतभेद तो हुआ ही करता है इस आधार पर हम मुसलमानों को वापस नहीं कर सकते (इतिहास कामिल इब्न असीर भाग 2 पृ 32) और मुसलमानों से कहा कि तुम मेरे देश में आज़ादी से रहो और अपने धर्म के अनुसार इबादत करो। जब यह जवाब सदस्यों प्रतिनिधिमंडल ने सुना तो उन्होंने वह उपहार जो मक्का वालों ने उन्हें दिए थे इसलिए बड़े बत्रीकों और पादरियों को उन्होंने उपहार दिए (बत्रीक वास्तव में Petriarch अरबी उच्चारण है जो एक बड़े पादरी को जो अपने क्षेत्र में लगभग पोप की हैसियत रखता है कहा जाता है) और उन्हें उकसाया कि यह वास्तव में तुम्हारे भी दुश्मन हैं और हमारे भी। क्योंकि उनके विचारों और विश्वासों से ईसाई सख्त ख़िलाफ हैं और ईसा और उसकी मां का अपमान करते हैं। अगर आप उन्हें हबशा में रहने का मौका दोगे। तो तुम ईसाईयत से दुश्मनी करोगे। इस उत्तेजना के परिणाम के रूप में आजकल हमारे ख़िलाफ लोगों को जोश आ जाता है उनका भी उत्तेजित हो जाना जरूरी था। इसलिए उन्हें गुस्सा आया और उन्होंने प्रस्ताव किया कि दूसरे दिन फिर राजा के सामने यह मामला रखा जाए। इसलिए दूसरे दिन जब दरबार लगा तो बड़े पादरी ने फिर सवाल उठाया और उन्होंने कहा कि यह मामला केवल राजनीतिक ही नहीं बल्कि धार्मिक भी है क्योंकि ये लोग धर्म की दृष्टि से मक्का वालों के ही ख़िलाफ नहीं बल्कि हमारे भी ख़िलाफ हैं और मसीह और उनकी माँ का अपमान करते हैं। ऐसे लोगों को अपने देश में नहीं रखना चाहिए।

राजा ने उन्हें फिर बुलवाया और पूछा कि मुझे सूचना मिली है कि तुम लोग यीशु और उसकी माँ का अपमान करते हो। क्या यह सही है। इस पर हज़रत जाफ़र जो रसूल करीम सूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचेरे भाई और हज़रत अली के सगे भाई थे मुसलमानों से आगे बढ़े और उन्होंने कहा हे राजा मैं अपनी धार्मिक पुस्तक की कुछ आयतें सुना देता हूँ उनमें यीशु और उनकी मां का उल्लेख है। आपको पता लग जाएगा कि हम उनके संबंध में क्या विश्वास रखते हैं। इसलिए उन्होंने सूरः मर्यम की कुछ प्रारंभिक आयतें पढ़कर सुनाई। जब उन्होंने यह आयतें सुनाई। तो चूंकि आमतौर पर ईसाइयों में ईसा को ख़ुदा और उनकी मां के बारे में ख़ुदा की माँ होने का विचार पाया जाता था और ऐबे सीनिया में मुशरिकाना विचार अधिक थे इसलिए पादरियों ने शोर मचा दिया कि हमारे मसीह का अपमान किया गया है। मगर राजा का यह धर्म नहीं था। वह यूनेटीरियन विचार का था जो ख़ुदा तआला को एक मानते हैं और परंपराओं से पता लगता है कि वह बाद में मुसलमान भी हो गया था। उसने कहा मुसलमान जो कुछ कहते हैं ठीक है। बल्कि तारीखों में लिखा है उस ने एक तिनका उठाकर कहा ख़ुदा की क़सम जो कुछ इन आयतों में वर्णित किया गया है मैं मसीह और उसकी माँ इस से एक भूसे के बराबर भी नहीं समझता। इस पर पादरी और अधिक उत्तेजित हो गए और उन्होंने कहा कि अगर आप उन के ख़िलाफ कोई कार्रवाई न की तो देश में विद्रोह हो जाएगा और आप के ख़िलाफ लोगों में जोश पैदा होगा। जब उन्होंने यह कहा कि अगर मुसलमानों के ख़िलाफ कोई कार्रवाई न की गई तो देश में विद्रोह हो जाएगा तो नज्जाशी को ग़ुस्सा आ गया और उसने कहा मैं छोटा था कि तुम ने मेरे चाचा से मिलकर मुझे राज्य से वंचित करना चाहा। मगर मेरे ख़ुदा ने मेरी मदद की और मुझे हुकूमत प्रदान की। इसलिए अगर राजा बना हूँ तो परमेश्वर की कृपा से जिस ने मेरे मुक़ाबले में तुम्हें हराया और मुझे सफल किया। क्या तुम समझते हो कि जिस ख़ुदा तआला ने मेरे बचपन में मेरी मदद फ़र्माई थी उस ख़ुदा तआला को अब मैं जवान हो कर छोड़ दूंगा। जाओ जो तुम्हारे जी में आता है कर लो। न्याय के मामले में तुम्हारी कोई बात सुनने को तैयार नहीं और मक्का के प्रतिनिधिमंडल को वापस लौटा दिया और मुसलमानों को सम्मान के साथ दरबार से विदा किया।"

(तफसीर कबीर भाग 5 पृ 3 से 5)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 6 December 2018 Issue No. 49

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 10 का शेष

इस मुलाकात से लगता है कि सब समाप्त हो गईं हैं। उनकी पत्नी कहने लगीं कि मुलाकात के कारण मेरा शरीर कांप रहै है। यह मेरी जिंदगी में किसी भी ख़लीफा के साथ मेरी पहली मुलाकात थी। जब पहली बार हुज़ूर को देखा तो हुज़ूर के चेहरा मुबारक पर एक ऐसी रोशनी थी जो पूरे कमरे को रोशन कर रही थी।

* पत्नी शिराज़ अहमद साहिब का कहना है कि यह मेरे जीवन में हुज़ूर अनवर की पहली मुलाकात थी। हम हुज़ूर अनवर के सामने थे, बहुत क़रीब, मुझे तो एक सपना लग रहा था। मैं शब्दों में बता नहीं कर सकती। बस हुज़ूर अनवर के चेहरे को देखा है। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला सब के नसीब में ऐसी मुलाकात फरमाए और प्यारे आक़ा का साया हमारे सिरों पर हमेशा सलामत रखे और हमें वैसा ही बना दे जैसा हुज़ूर चाहते हैं।

* एक दोस्त, औवेस मलिक ने बताया कि मेरी पत्नी और बच्चे पहली बार मुलाकात कर रहे हैं। पत्नी कहने लगीं कि जब हमें पता चला कि हमारी हुज़ूर अनवर से मुलाकात है तो हम ख़ुशी में सारी रात ठीक से सो भी नहीं सके। आज, हमें जीवन में इस तरह की ख़ुश मिली है जो बयान से परे है।

हुज़ूर अनवर के दफ्तर जो भी बाहर आया वह व्यक्ति भावनाओं से भरा हुआ था। हर किसी की अपनी भावनाएं थीं। इन लोगों ने जो कुछ क्षण अपने आक़ा की निकटता में व्यतीत किए वे उनके सारे जीवन की पूंजी और उनके लिए और उनके बच्चों के लिए यादगार क्षण थे। हर किसी ने अपने पसंदीदा आक़ा के दुआओं से हिस्सा हासिल किया और आशीर्वाद प्राप्त किया। दर्शन की प्यास बुझी और कुछ खुश क्षण हमेशा के लिए तृप्त कर गए।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम 8 बज कर 5 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के हॉल में पधारे और कार्यक्रम के अनुसार आमीन के समारोह का आयोजन हुआ।

आमीन का समारोह

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने 28 बच्चों और बच्चियों से कुरआन की एक एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई। निम्नलिखित भाग्यशाली बच्चे और बच्चियां अमीन के आयोजन में शामिल हुए थे।

प्रिय अफ्फान लतीफ, माहिर अहमद ताहिर, कृष्ण यूसुफ, अयान मलिक, फ़ाहरस इकबाल, मुनीफ नईम, शायान ताहिर, सरमद अहमद चीमा, मूनस अहमद, बासल रेहान चीमा, रहमान खोखर, मुनीब अहमद, हातिम अफज़ाल, ख़लीक़ अहमद शाद, फ़राज़ अहमद साही , फरान तारिक।

प्रिया दानिया अहमद आराएँ, शाफिया ख़ान, अतियतुल खालिक़, सूहा मिर्ज़ा, ज़ैनब मुबश्शिर काहलों, अतफा किरण फैज़ान, लबीकह आमिर, नादिया अहमद, सानिया शफकत, सायरा अहमद, ईशाल मुदस्सर बट, मनाहिल इलाही चीमा।

ये बच्चे और बच्चे जर्मनी की 26 विभिन्न जमाअतों से पहुंचे थे। समारोह 8 बज कर 20 मिन्ट पर समाप्त हुआ। नमाज़ मग़रिब तथा इशा की अदायगी में अभी 10 मिनट की देरी थी। इस दौरान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शफकत करते हुए अमीर साहिब जर्मनी से बातचीत फ़रमाई।

एक सितम्बर शनिवार सफर के दौरान जर्मनी आते हुए रास्ते में जब एक रेस्टोरेंट पार्किंग क्षेत्र में कुछ देर के लिए रुके थे तो वहाँ एक जर्मन महिला ने एशियाई लोगों के इतने बड़े काफिले को देखकर अपनी परेशानी और चिंता व्यक्त किया था तो अमीर साहिब जर्मनी ने जमाअत का परिचय के साथ इसे काफी हद तक समझा दिया था और वह सन्तुष्ट हो गई थी।

एक पार्किंग क्षेत्र में एक सिख युवा अपने बेटे के साथ एक ही पार्किंग क्षेत्र में खड़ा था। जब उन्होंने हुज़ूर अनवर को देखा, तो उन्होंने ने हुज़ूर अनवर के बारे में पूछा। जब उन्हें बताया गया कि हुज़ूर अनवर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पांचवें ख़लीफा और जमाअत अहमदिया के प्रमुख हैं और कादियान हमारा केंद्र

पृष्ठ 1 का शेष

ठोकर खा चुके हैं। तुम्हारे देश में सहस्त्रों यहूदी मौजूद हैं तुम उनसे पूछकर देखो कि क्या यहूदियों की यही आस्था नहीं, जो इस समय तुम प्रकट कर रहे हो। अत: वह ख़ुदा जिसने ईसा के लिए एलिया नबी को आकाश से न उतारा और यहूदियों के समक्ष उसको उपमाओं से काम लेना पड़ा, वह तुम्हारे लिए क्योंकर ईसा को उतारेगा। जिसको तुम दोबारा उतारते हो, उसी के फैसले को तुम अस्वीकार करते हो। यदि सन्देह है तो कई लाख ईसाई इस देश में मौजूद हैं और उनकी इंजील भी। उन से पूछ लो कि क्या यह सत्य नहीं है कि हज़रत ईसा ने यही कहा था कि एलिया जो दोबारा आने वाला था वह युहन्ना ही है अर्थात् यहया। और इतनी बात कहकर यहूदियों की पुरानी आशाओं पर पानी फेर दिया। यदि अब यह आवश्यक है कि ईसा नबी ही आकाश से आए तो इस स्थिति में हज़रत ईसा सच्चा नहीं ठहर सकता क्योंकि यदि आकाश से वापस आना अल्लाह के विधान में है तो इल्यास नबी क्यों वापस न आया और उसके स्थान पर यहया को इल्यास ठहरा कर उपमा से काम लिया गया। बुद्धिमान के लिए यह सोचने का स्थान है।

हाशिया:

जो मनुष्य मानव समाज पर क्रोध की शक्ति को बढ़ाता है वह क्रोध से ही नष्ट किया जाता है। इसलिए ख़ुदा ने सूरह फ़ातिह: में यहूदियों का नाम ख़ुदा के क्रोध के भाजन रखा। यह इस बात की ओर संकेत था कि प्रलय के दिन तो प्रत्येक अपराधी ख़ुदा के क्रोध का स्वाद चखेगा। परन्तु जो व्यर्थ ही संसार में क्रोध करता है वह संसार में ही ख़ुदा के क्रोध का स्वाद चख लेता है। ईसाइयों से यहूदियों की अपेक्षा संसार में अधिक क्रोध प्रकट नहीं हुआ। इसलिए सूरह फ़ातिह: में उनका नाम ज़ाल्लीन रखा गया। इस शब्द के दो अर्थ हैं। एक तो यह कि वे गुमराह हैं और दूसरा अर्थ इसका यह है कि वे खोए जाएँगे। मेरे निकट यह उनके लिए शुभ सन्देश है कि किसी समय झूठे धर्म से मुक्ति पाकर इस्लाम में खोए जाएँगे और शनै:-शनै: अनेकेश्वरवाद की आस्थाएं और शर्मनाक कुरीतियों का परित्याग करते-करते मुसलमानों के रंग में रंगीन होकर एकेश्वरवाद पर आस्था रखेंगे। अत: ज़ाल्लीन के शब्द में जो सूरह फ़ातिह: के अन्त में इसके दूसरे अर्थ के अनुसार एक वस्तु का दूसरी वस्तु में आत्मसात होना और खोए जाना है। भविष्य में ईसाइयों की धार्मिक अवस्था के लिए यह एक भविष्यवाणी है।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 55 से 57)

☆ ☆ ☆

है तो इस पर उसकी रुचि बढ़ी और कहने लगा कि मैं अमृतसर का रहने वाला हूँ और कादियान तो हमारे पास ही है और मैं कादियान और जमाअत अहमदिया के बारे में जानता हूं। उन्होंने हुज़ूर अनवर से मिलने की अपनी इच्छा व्यक्त की। लेकिन किसी कारण से प्रशासन इस को पूरा नहीं किया जा सका। हु

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने इस सिख नौजवान के बारे में पूछा इस पर हुज़ूर अनवर की सेवा में बताया गया कि वह अमृतसर का रहने वाला था और हुज़ूर को देख कर मिलने की इच्छा कर रहा था इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि तो फिर उस को मिलने देना था वह मिल लेता और तस्वीर बना लेता। उधर ही मिल लेता तो कोई परेशानी नहीं थी। इसे मिला देना था।

इस के बाद आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने मग़रिब तथा इशा की नमाज़ों को जमा कर के आद किया। नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर गए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad